

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24

अक्टूबर - I - 2022



अंक - 13

माउण्ट आबू

Rs.-10

महासम्मेलन • दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण थीम के तहत चार दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन

मीडिया समस्या के साथ उचित समाधान भी सुझाए



सम्मेलन के दौरान विभिन्न कार्यशालाएं, संगोष्ठी एवं टॉक शो का भी आयोजन किया गया। सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुए अपने-अपने विचार रखे एवं श्रेष्ठ संकल्प भी लिये ...

निमित्त-निर्माण भाव से समाज को दिशा दें

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने परमात्मा के घर में देशभर से आये सभी मीडिया के



भाई-बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि ईश्वरीय और परमात्म संदेश देने के संदेशवाहक सभी मीडिया के भाई-बहनों हैं। निमित्त और निर्माण भाव से समाज को नई दिशा देने की सेवा करते हैं।

शांतिवन-आबू रोड। ब्रह्माकुमारी संस्थान के मीडिया विंग द्वारा शांतिवन में 'समाधानपरक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर आयोजित चार दिवसीय 26वें राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का सिरोंही के प्रभारी मंत्री एवं राजस्थान विधानसभा के उप मुख्य सचेतक महेंद्र चौधरी, आईआईएमसी दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी एवं अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन सहित अन्य वक्ताओं ने दीप प्रज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। देशभर से आये 1500 से अधिक मीडियाकर्मियों को सम्बोधित करते हुए प्रभारी मंत्री महेंद्र चौधरी ने कहा कि पत्रकारों की समाज में बड़ी भूमिका होती है। दुनिया की कोई भी समस्या हो, उसका समाधान जरूर होता है। आज समस्या से घिरे समाज में ध्यान बहुत जरूरी है। इसमें भी खास मीडियाकर्मियों के लिए ध्यान जरूरी है।

यहां आकर शक्ति का अनुभव होता है माननीय मंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में आकर अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है। देश में कई संस्थानों में जाना हुआ, कई कार्यक्रमों में भाग लिया लेकिन यहां के पवित्र वातावरण में आकर पवित्रता का अनुभव होता है और मन को शांति मिलती है। वर्ष 1937 में बहुत ही छोटे स्तर पर संस्थान की नींव रखी गई थी और अपनी 86 वर्षों की यात्रा में आज विश्व के 140 देशों में राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्म का संदेश दिया जा रहा है।

शब्दों में अपनी ताकत होती है दिल्ली से आए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया स्टडीज के डायरेक्टर प्रो. ओमप्रकाश देवल ने कहा कि शब्द की

अपनी ताकत होती है। एक पत्रकार के ऊपर निर्भर करता है कि आप शब्दों को किस तरह चुनते हैं और कैसे प्रस्तुत करते हैं। इससे तय होता है कि उस समाचार पत्र का समाज पर क्या इफेक्ट होगा।

गलत सूचनाएं रोकने हेतु मीडिया साक्षरता शिक्षा आईआईएमसी, दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि समाज को प्रभावित करने के लिए मीडिया एक

शब्दों, समाचार से समाज को दें सकारात्मक ऊर्जा

अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि सभी मीडिया के भाई-बहन सबसे पहले स्व परिवर्तन करें। अपनी आंतरिक स्थिति की चेकिंग करें। यदि हमें सारा दिन, 18 घंटे खुशी, संतुष्टता और प्रसन्नता के साथ काम करना है तो रोज सुबह आधा घंटा अपनी आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज जरूर करें।

महत्वपूर्ण माध्यम है। आज 99 फीसदी खबरें सोशल मीडिया से आ रही हैं। आज के माहौल में खबर की सत्यता को परखना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

इस मंच से एक संकल्प लें पुणे की एसएमएस प्रोडक्शन की डायरेक्टर सुपर्णा गंगवाल ने कहा कि मीडियाकर्मियों यहां से सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने का संकल्प लेकर जाएं।

दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें दिल्ली इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के राजीव कुमार निशाना ने कहा कि जब आप मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता करते हैं तो समस्याएं तो सामने आती हैं लेकिन दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें तो सफलता जरूर मिलती है।

जीवन के प्रति रखें सकारात्मक दृष्टिकोण

पटना से आए सीनियर जर्नलिस्ट व ट्रेनर डॉ. राजीव कुमार सिंह ने कहा कि जब तक हमारा जीवन मूल्यनिष्ठ नहीं होगा तब तक हम भारत को स्वर्णयुग नहीं बना सकते हैं।

राजयोग ने बदला मेरा जीवन

अभिनेत्री रीमा सरीन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी के संपर्क में आने के बाद मेरा जीवन बदल गया। मैं रोज राजयोग और मुरली फॉलो करती हूँ। आज युवा और मीडिया के लिए सकारात्मक होना बहुत जरूरी है।

इन शख्सियतों ने भी रखे विचार

बेंगलुरु से आए एमेरिटस के संस्थापक और पीआरसीआई के एमबी जयराम, रायपुर के केटी यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति मानसिंह परमार, एयर इंडिया के ऑथर जितेंद्र भार्गव, रैडियो सरगम इंदौर के मैनेजिंग डायरेक्टर आशीष गुप्ता, ब्रह्माकुमारी के कार्यकारी सचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय, अति. मुख्य प्रशासिका न्यूयॉर्क से राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, मीडिया विंग मुंबई के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. संजय, कटक से विंग के ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नथमल, विंग के गुजरात की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. रंजन बहन, ग्लोबल पीस इनिशिएटिव की निदेशिका ब्र.कु. डॉ. विन्नी सरीन, हैदराबाद से विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर सरला आनंद, मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. ओंकारचंद सहित अन्य वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. भाई-बहनों एवं मीडिया जगत से जुड़े महानुभावों ने अपने विचार रखे।

राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी' की मानद उपाधि से सम्मानित



चेन्नई। राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर, संपादक, ओम शान्ति मीडिया को साउथवेस्टर्न अमेरिकन यूनिवर्सिटी द्वारा मीडिया एंड कम्यूनिकेशन में डी.लिट की मानद उपाधि से नवाजा गया। चेन्नई के रशियन कल्चर सेंटर में हुए दीक्षांत समारोह में साउथवेस्टर्न अमेरिकन यूनिवर्सिटी के जॉन पीटर, पूर्व जज हरिदास, हाईकोर्ट तथा एआईएडीएमके पार्टी के अध्यक्ष डॉ. तमिल मगन हुसैन ने राजयोगी ब्र.कु. डॉ. गंगाधर को मीडिया एंड कम्यूनिकेशन में डी.लिट प्रदान किया। इस अवसर पर तमिल फिल्म अभिनेता अरुलमनी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कलम की पवित्रता करेगी कमाल

आज हम मीडिया की शक्तियों पर ध्यान दें तो उनका उपयोग जिस तरह से होना चाहिए उस रूप में नहीं हो रहा है। मीडिया स्वार्थ से प्रेरित होता प्रतीत हो रहा है। मीडिया माध्यम की पवित्रता पर ही प्रश्नचिह्न दिखाई दे रहा है। हम सब चाहते हैं इसका उपयोग समाज की हर इकाई की बेहتری के लिए हो। ऐसा ही चाहते हैं ना? बेह तरी माना जहाँ पर समाज में सुसंस्कार, सभ्यता, समृद्धि एवं सुख हो। हमने मीडिया को सुंदर विचारों के साथ ही आरंभ किया ना ! पर चलते-चलते चुनौती एवं स्वार्थ के वश अपने पवित्र उद्देश्य को दरकिनार कर दिया। हम देखना चाहते हैं कि मीडिया ऐसा माध्यम बने कि जहाँ सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय वाली परिकल्पना साकार हो। मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसकी पहुंच बड़ों से लेकर साधारण जन तक है। ये एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो अपनी बात प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुंचा सकता और दूसरों के उन्नत विचारों को अपनी कलम में समाहित कर सकता है। तो आज आवश्यकता है हम प्रभावी माध्यम बनें। बेशक चारों ओर हमारे इस पवित्र उद्देश्य को सार्थक करने में कई सारी चुनौतियां भी हैं किंतु हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि अंधेरे में ही रोशनी की आवश्यकता होती है। मीडिया माध्यम को प्रभावशाली बनाने के लिए उसकी रचना में शक्ति होनी चाहिए। और उस शक्ति के लिए स्वयं में आत्मबल व श्रेष्ठ विचार होना जरूरी है। स्वयं में श्रेष्ठ संस्कार होगा तो वो कलम में भी उतरेगा। आपके शब्दों के वायब्रेणस पाठकों तक पहुंचेंगे और उनके जीवन में भी बदलाव का कारण बनेंगे। हमें सिर्फ समस्याओं और होने वाली घटनाओं का ही समाचार देकर अपनी ज़िम्मेदारी को सीमित नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि मीडिया का उद्देश्य है आम जन की जिंदगी में बेह तरी लाना, उनकी जटिलताओं को सरल बनाना, सहयोग करना, सही दिशा देना।

**ब्र.कु. गंगाधर**

हाल ही में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'समाधानपरक पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर महासम्मेलन में ये निष्कर्ष निकलकर सामने आया कि हमें न सिर्फ समाज की समस्याओं को उजागर करना है बल्कि समाधान स्वरूप भी बनना है। अब मन में प्रश्न उठता है कि ऐसी पहल की कैसे जाए? इसके लिए स्वयं के जीवन में सकारात्मकता को दृढ़तापूर्वक अपनाना होगा। हमें आध्यात्मिक शक्तियों से रूबरू होना होगा। इसका सीधा-सा, सरल-सा अर्थ है कि आत्मा को शक्तिशाली करना होगा। आत्मा की आंतरिक शक्तियों को जागृत कर उसे कर्मक्षेत्र पर क्रियान्वित करना होगा। आज आवश्यकता है सशक्त माध्यम बनने की। जो अपने अंदर होगा वही तो कलम में उतरेगा, शब्दों में आयेगा और पाठकों तक उन शक्तियों का संचार होगा। हमारा ये अनुभव है कि अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए राजयोग मेडिटेशन जैसे शक्तिशाली टूल को अपने जीवन में स्थान देना ही होगा। मीडिया को मेडिटेशन का साथ मिलेगा तो उसकी रचना में ताकत आयेगी। हमने ये करके देखा कि सुबह उठते ही अगर हम सकारात्मक ऊर्जा के साथ अपने को मेडिटेट करते हैं, तो श्रेष्ठ विचारों का संचार हमारे मन को प्रसन्न और प्रफुल्लित करता है। मन में कुछ अच्छा करने की इच्छा पैदा होने लगती है। श्रेष्ठ शक्तियों से रूबरू होने के पश्चात् वो शक्तियां हमारे कार्यक्षेत्र में भी प्रवाहित होने लगती हैं और सभी को प्रभावित करने लगती हैं। हम सभी चाहते हैं ना कि समाज सुधरे, समाज आगे बढ़े, बदलाव हो, जहाँ सभी सुख-शांति से रहें। तो सीधा सा और सरल-सा उपाय है कि स्वयं को सशक्त करना ही होगा। अन्यथा तो हमारे पास जो परमात्म प्रदत्त विशेषताएँ हैं उनका इस्तेमाल दूसरी दिशा में ही होता रहेगा। क्योंकि जो शक्ति है, वो अपना जलवा तो दिखायेगी ही। और अगर उसमें स्वार्थ मिल जायेगा तो वो समाज की बेहतरी के बजाय नुकसानदायक होगा। हम तो आपको यही बताना चाहते हैं कि कलम में अगर ताकत होगी तो कलम कमल की तरह कीचड़ में भी पवित्रता को बनाये रखेगी। बस, शुरुआत स्वयं से करनी है तो समाधान अवश्य मिलेगा। फिर हमने अगर शुरुआत करने की हिम्मत की तो कारवां यूँ ही आगे बढ़ता चला जायेगा और अपने पवित्र उद्देश्य का साकार रूप सामने नज़र आने लगेगा। बेशक हम चौबीसों घंटे ऐसी सेवाओं में अपने आप को बिज़ी रखते हैं, लेकिन अगर इसके साथ ही आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर होंगे तो तरोताज़ा भी महसूस करेंगे, न थकेंगे, न निराश होंगे, न हताश होंगे। तो हमारा आग्रह यही होगा कि 24 घंटे में से एक घंटा स्वयं के लिए निकालें। सकारात्मक ऊर्जा से अपनी बैटरी को चार्ज कर लें। जैसे मोबाइल को चार्ज करते हैं, फिर सारा दिन यूज़ करते हैं। उसी तरह चार्ज होकर हम दिन में आने वाली हर घटनाओं, परिस्थितियों में भी ऊर्जावान रहेंगे और अपनी जिम्मेवारी बखूबी निभा पायेंगे। जब सकारात्मक कार्य किया होगा तो वो दुआएँ भी हमारे मन-मस्तिष्क को तरोताज़ा रखने में सहायक रहेंगी। और तभी स्वार्थ और परमार्थ दोनों कार्य सिद्ध होंगे।

लाइट हाउस वही बन
सकता जिसमें सर्व
शक्तियों का स्टॉक हो



 राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने कहा है बच्चे लाइट हाउस बनो। तो लाइट हाउस का काम क्या होता है? चारों ओर रोशनी देना। इस समय दुनिया के आत्माओं की यही इच्छा है कि सदा सुखी रहें, सदा शान्त रहें। साधारण अशान्ति से शान्ति तो सब लोग समझते हैं लेकिन हम लोगों की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जो मन निगेटिव या व्यर्थ संकल्पों में भी नहीं जायें। इससे किनारा होगा तो हमारे बेस्ट, शुभ संकल्प होंगे। फिर उन समर्थ संकल्पों का वायब्रेशन स्वतः जाता है।

बाबा जब आते हैं तो वायब्रेशन अच्छे लगते हैं, क्यों? क्योंकि वह सागर है। ज्ञान का, सर्व शक्तियों का जो वायुमण्डल में चारों ओर फैल जाता है। तो ऐसे हम सबको भी लाइट हाउस होकर वायुमण्डल फैलाना है। वह हृद की रोशनी फैलाने वाला लाइट हाउस तो कॉमन है, लेकिन हम हैं रूहानी लाइट हाउस। शक्ति, शान्ति और खुशी की लाइट देने वाले लाइट हाउस हैं। लेकिन रूहानी लाइट हाउस वही बन सकता है जिसमें सर्व शक्तियों का स्टॉक हो। अगर खुद में ही नहीं होगा तो दूसरों को कैसे देगा? और लाइट हाउस की लाइट तो पॉवरफुल होती है। तो इतनी शक्तियां जमा करके लाइट हाउस बनके वायुमण्डल को परिवर्तन करना है। विश्व परिवर्तन की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। तो बाबा ने यह जो जिम्मेवारी दी है, वह हमको अवश्य निभानी चाहिए। कई समझते हैं हम तो बहुत बिजी रहते हैं इसलिए पॉवरफुल योग नहीं हो सकता। विदेही बनना, अशरीरी बनना या कर्मातीत बनना - यह तो बहुत ऊंची मंजिल है। इसके लिए अगर हम

अभी से तैयारी करें तो लास्ट में हमको यह तैयारी मदद देगी।

विदेही माना यह नहीं कि देह से एकदम न्यारे हो जायें फिर तो शरीर छूट जायेगा। विदेही का अर्थ ही है कि कोई भी देह की कर्मन्द्रियां चाहे सुनने वाली, चाहे देखने वाली, चाहे सोचने वाली यह कोई भी मुख्य कर्मन्द्रियां हमको देह भान में नहीं लाये अर्थात् देह की कोई भी कर्मन्द्रियां हमको अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे। कई बार कोई-कोई बात से कनेक्शन नहीं होता तो भी आदत होती है- देखेंगे, सुनेंगे...। तो यह समझो हमारी देखने की कर्मन्द्रियां जो हैं वह लूज हैं। वश में नहीं हैं क्योंकि देखेंगे तो सूच भी चलेगा कि कौन आया, देखने की आँख भी धोखा दे रही है और सोच भी चल रही है कि इस समय क्यों आया, कैसे आया तो हमारी कितनी शक्तियां व्यर्थ गईं। ऐसे हर एक में कोई ना कोई नेचर होती है। कोई को कोई मतलब ही नहीं होगा तो भी सोचने की आदत होगी। छोटो-सी बात पर भी सोच बहुत चलेगा, यानी सोचने की शक्ति, मन पर कन्ट्रोल नहीं है। आंख के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है, कान के ऊपर कन्ट्रोल नहीं है और किसी की फिर बोलने की आदत होती। दो की बात चल रही होगी तो वह वहाँ भी जरूर बीच में बोलेगा, रह नहीं सकेगा। कोई कनेक्शन ही नहीं है फिर भी वह बोलेगा जरूर। कोई ना कोई विशेष कर्मन्द्रियां जो होती हैं वह खींचती हैं, तो हर एक को अपनी चेकिंग करनी चाहिए कि कौन-सी कर्मन्द्रियां मेरे कन्ट्रोल में नहीं हैं? जो अपने कन्ट्रोल में नहीं है वही अन्त में धोखा देंगी।

अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी है



 राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली पढ़ते-सुनते लगता है कि बाबा कितनी मेहनत करता है हमको बनाने के लिए, जो कोई देख के कहे तुमको ऐसा किसने बनाया? ऐसा बनाता है और रिटर्न कुछ नहीं कर सकते हैं, बनके दिखाते हैं बाबा को। जो कोई मनुष्य आत्मा नहीं बना सकती, वो पतितों को पावन बनाने वाला है और हम कभी पतित बनते हैं, कभी पावन बनते हैं। अभी हमको ऐसा बनाया है जो उनकी हीरे की मूर्ति बनाकर सोमनाथ के मन्दिर में पूजते हैं। तो एवरहैप्पी, एवरहेल्दी रहना हो तो ऐसे अलबेले या लापरवाह नहीं रहना क्योंकि बाबा कहते हैं याद में ऐसे रहो, सब कुछ भूल याद करो। सब कुछ भूल याद करेंगे तो आखिर वो घड़ी आ जाती है नष्टोमोहा...। कहीं भी कोई भी देह-सम्बन्धियों में अथवा अपने विचारों में भी मोह न हो। मोह दुःखदाई है। मोह स्मृति-स्वरूप बनने नहीं देता है। बाबा ने मनमनाभव का वरदान दे दिया फिर बुद्धि को कहता है मध्याजी भव। लक्ष्य को सामने रखो (लक्ष्य सोप है) भले ज्ञान पानी, अमृत मिलता है फिर भी सोप के बिगर सफाई नहीं होगी। भले ज्ञान सुनेंगे सुनायेंगे, अच्छा लगता है, मन शान्त हो जाता है।

मनमनाभव होने से अंग-अंग शीतल हैं, योगी के अंग शीतल हैं। शीतल शब्द बहुत अच्छा है, शीतला देवी का पूजन है। कोई भी प्रकार की गर्म नेचर नहीं है, शीतल नेचर है। अपने संग के रंग में हमारे सारे पाप खलास कर दिये हैं। तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे...।

तो मनन चिंतन में कोई चिंता-फिकर नहीं है। कार्य भले करो निश्चित रहो ना! पूछताछ काहे को करें, बाबा को कराना है तो ऑटोमेटिकली आज दिन तक आपेही होता आया है। बाबा ने मुझे जहाँ जैसे रखा वहाँ हाज़िर रही हूँ तो इसमें बहुत आनंद है। भक्ति में भी कहते हैं जो हरि की इच्छा। अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी होती है भागीरथ के समान, तो ऐसे आप भी आनंद लो ना! जब तक वह अपने जैसा नहीं बनाता तब तक छोड़ता नहीं है। भगवान पीछे उसके पड़ेगा जो सच्ची सजनी होगी, सगाई करते ही उसकी याद रहती है, पर शादी के बाद में भूल जाये तो? कोई कर्मबन्धन खींचता हो तो? बाप क्या करेगा! पिताव्रत में सपूत बनना है, सपूत वह जो सबूत देवे। बाबा ने कहा बच्चे ने माना। बच्चा कहे हों जी, बाबा कहता मैं तुम्हारे साथ हूँ।

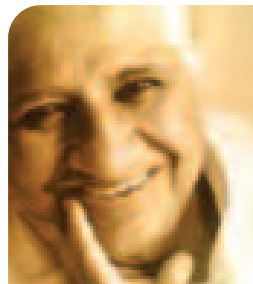


किसी भी बात को न देख अपने को देखो

बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है- बच्चे यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। ब्राह्मण न बनें तो देवता नहीं बन सकते। बाब का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। ग्रहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर। इन तीनों पर ग्रहचारी आ नहीं सकती। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की ग्रहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। ब्रह्मपति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है जरूर मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ- यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मायुष्यवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्नी वाचने देखने वाला हूँ। सफलता का सितारा हूँ - हमारे ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं

जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक-दो से कम्पटीशन करते रहें, भेंट करना, क्रिटिसाइज करना- यह ऊंचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की ड्यूटी मिली हुई है? हरेक को ड्यूटी मिली है- अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्यूटी नहीं देता। मुझे कोई नहीं सम्भाले नहीं तो बर्डन हो जायेगा। मैं कोई छोटी बेबी थोड़े ही हूँ, जो घड़ी-घड़ी हमें कोई सम्भालता रहे। हमारा ध्यान रखे। इतना छोटा तो नहीं बनना है। तो मुख्य बात अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे। तो एकरस स्थिति बनाने के लिए अन्तर्मुखी बने।

बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं है। स्थिति नीचे-ऊपर तब होती



 **राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी**

किसी भी बात को न देख अपने को देखो।
सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे
बाबा नहीं देखता। जो अपने को चेक
करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में
क्या कमी है।



है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई। हमारी सदा शुभ भावना शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है। मुख चलाना नहीं है। अगर मुँह बदल भी जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा। हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को

बनाना है। तो बाबा कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता जरूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह इशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। तो मुख्य बात है सब बातों को छोड़ अन्दर से सन्यास वृत्ति रखो। सबसे बड़े सन्यासी तो हम हैं। सारी दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं। इससे कोई भी प्रीत नहीं।

सच्चाई और स्नेह हमारी भावना से निकल न जायें। जहाँ सच्चाई की भावना है। वहाँ कुछ भी कहे, सामने वाले को भाता है। जहाँ स्नेह नहीं है, शब्द हैं तो वो दिल को लगते हैं। हमारा हर आत्मा के प्रति सच्चा स्नेह हो। कल्याण की भावना हो। बाबा जितना स्नेह हमें देता है उससे हम एगज़ाम्पल बनकर दिखाएं।



ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

प्रकृति के मालिक बनें न कि उनके सेवक

मनुष्य जब धरा पर आता तो सबसे पहले वो पदार्थों का सेवन करता, जैसे ही वो बड़ा होता तो उसके सम्बन्ध व्यक्ति, प्रकृति से बनते हैं। ये सब व्यक्ति के लिए आवश्यक है किंतु हम उसे भोगते हैं। परमात्मा का कहना है कि आप सबकुछ करते उससे अनासक्त रहें तब पुण्य और श्रेष्ठ बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। अन्यथा तो हम उसके सेवक बन जाते, हमें मालिक बनकर इन सब चीजों का सेवन और उपयोग करना है। तभी हम सफल हो सकेंगे।

श्रेणी की ही लगती हैं परंतु सत्य और

उन पर ध्यान देकर उन्हें आचरण में लाना है भी आवश्यक और लाभप्रद। उनमें से पहले हम भोग्य-पदार्थों की बात को लेते हैं।

1. सेवक सेव्य सम्बन्ध

जैसे पहले बताया कि शरीर को स्वस्थ, सशक्त और समर्थ बनाये रखने के लिए खान-पान की आवश्यकता होती है। ऐसे ही दूसरी इन्द्रियों के भी अपने विषय हैं। आँखों द्वारा हम हरियाली और रंग-बिरंगे फूल देखते हैं, झरने और नील गगन में तारे देखते हैं, नदी और पर्वत को देखते हुए ठंडी हवा के झोंकों में झूमने का सुख अनुभव करते हैं, इन्द्र धनुष और तितली की रंगीनियों को देखकर चकित भाव से विभोर हो उठते हैं, मोर के नाच और मंदिर की मूर्ति कला से प्रभावित होते हैं, कोयल की कू-कू और ह्र पशु-पंखी की बोली सुनकर लुभायमान होते हैं, जिभा से आम जैसे फलों के रस और पानी की प्यास बुझाने की शक्ति का लाभ लेते हैं, जड़ी-बूटी भी, गंगा का शीतल जल भी, खनिज पदार्थ, धातु आदि भी हैं और हिरे-मोती भी। ये सब हमारे लिए ही तो हैं। परंतु कष्ट और क्लेश तब पैदा होता है जब हम इनमें आसक्त हो जाते हैं, इनके आकर्षण-डोरों में बंध जाते हैं और इनके गुलाम होकर रहने लगते हैं या तो इनको प्राप्त करने के लिए आतुर-व्याकुल हो उठते हैं। कुदरत ने इन्हें दिया है हमारी सेवा के लिए परंतु हम इन्हें अपना स्वामी बना देते हैं। मन में यही छाये रहते हैं। इनकी ही कृपा को पाने की हम हर कोशिश करते हैं। किसी ने कहा है कि “खाना इंसान के लिए बना है, इंसान खाने के लिए नहीं।” ठीक वैसे ही जितने भी भोग्य पदार्थ हैं, वे हमारे लिए बने हैं, हम उनके लिए नहीं। परंतु जब मनुष्य इसके विपरित भाव पर अपना जीवन जीने लगता है तब उसमें विकार उत्पन्न होते हैं। विषय-आसक्त होकर, वह विषय-आकुल और विषय-लोलुप बन जाता है। और विषयों का सेवक होकर जीवन जीने लगता है। विषयों के प्रति सेवक भाव रखने तथा उनमें आसक्त न होने में ही जीवन की सफलता है।

2. वर्ज्य सम्बन्ध

संसार में कुछेक पदार्थ ऐसे भी हैं जो हमारे खान-पान के लिए नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर तम्बाकू या उससे बने हुए सिगरेट-बीड़ी, चिल्लम-हुक्का, अफीम या उससे बने हुए नशीले पदार्थ आदि - ये मनुष्य के लिए भक्ष्य पेय या सेव्य नहीं हैं। ये वर्जित हैं। इनका सेवन ठीक नहीं है।

3. पदार्थों से सम्बन्ध-परिवर्तन

जन्म होते ही अनेकानेक पदार्थों से हमारे

सम्बन्ध तो हो ही जाते हैं। परंतु उन सम्बन्धों में हमारी मनोवृत्ति ही से बहुत अंतर पड़ता है। यदि हम आसक्ति, इच्छा, तृष्णा, विषय-लोलुसा, इत्यादि से कोई पदार्थ लेते हैं तो उससे एक तो हमारी वह वृत्ति दिनोदिन दृढ़ होती जाती है और हमें अपना दास बना लेती है, दूसरे वस्तु के आधिक्य, असमय सेवन इत्यादि के कारण स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है और धन का भी अपव्यय होता है तथा संसार में अनाचार फैलाने के निमित्त बनते हैं। यदि हम उनको बाहुल्यता से और वैभव-प्राप्ति की वृत्ति से प्रयोग करते हैं तो हम विलासिता की ओर बढ़ते हैं और ऐश के बंदी बन जाते हैं। इसके विपरित यदि हम उनके प्रति सात्विकता, संतुलन और संयम को बनाये रखते हैं और उन्हें सेवा भाव से या ‘निष्काम’ वृत्ति से प्रयोग करते हैं तो हम हानि-लाभ, प्राप्ति-अप्राप्ति इत्यादि हर अवस्था में संतुष्ट और सुखी रहते हैं। यदि हम त्याग भावना और सादगी को महत्व देते हैं तो हमारे आचरण और अतीन्द्रिय सुख में उत्कर्ष होता है और फिर यदि उन्हें प्रभु-समर्पण करते हैं तो हमारा नैतिक बल बढ़ता है, आत्मा पवित्र होती है और हम पाप अथवा संताप से बचते हैं।

4. व्यक्तियों से अपने सम्बन्धों का दिव्यीकरण

जो बात हमने पदार्थों के सम्बन्ध में कही वही व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। देह के सम्बन्धियों से जब हम व्यवहार करते हैं तो लेन-देन के कारण कर्मों का लेखा-जोखा तो बनता ही है। फिर उसी हिसाब-किताब के कारण पुनः हम सुख-दुःख के भागीदार बनते रहते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम इन सम्बन्धों में भी वृत्ति और दृष्टि का परिवर्तन करें। जब तक हम इन सम्बन्धों को लौकिक एवं साधारण बनाये रखेंगे तब तक हमारे कर्मों का खाता चलता रहेगा। कोई व्यक्ति ज्ञानी या योगी ही क्यों न हो, उससे भी यदि हम लौकिक रीति से सम्बन्ध, व्यवहार या लेन-देन बनायें रखेंगे तब तक हम कर्मों की जंजीरों में जकड़े रहेंगे। अतः आवश्यकता इस बात की है कि उस दृष्टि और वृत्ति को बदलकर उन सम्बन्धों को अलौकिक, योगानुकूल, मर्यादा-युक्त, सेवा-निमित्त तथा आत्मिक दृष्टि पर आधृत बनायें। वैसे ही किन्हीं प्रकार के व्यक्तियों से भी हमारा सम्बन्ध वर्ज्य है। उनका संग हमारे लिए ‘कुसंग’ है। वे हमारे मन एवं चरित्र को वैसे ही दूषित करते हैं जैसे वर्ज्य पदार्थों के भोग से शरीर को हानि पहुंचती है। वे हमारी चेष्टाओं को बिगाड़ते हैं, हमारे संकल्पों को निकृष्ट बनाते हैं और हमारे विचारों को नकारात्मक बनाते हैं। वर्ज्य भोग-पदार्थों से तो एक जन्म के लिए हानि होती है परंतु वर्ज्य सम्बन्धों से मन एवं संस्कारों के दूषित होने से जन्म-जन्मांतर की हानि होती है।



नागदा-म.प्र.। कर्नाटक के राज्यपाल थावर चंद गहलोत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम बहन।



राजकोट-पंचशील(गुज.)। राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, गुजरात जोन संचालिका को इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड और वूमन वर्ल्ड रिकॉर्ड फॉर अल्टीमेट केम्पेन ऑगस्ट एडिक्शन फ्री राजकोट का अवॉर्ड देते हुए अरविंद रैयानी, मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर ट्रांसपोर्ट, सिविल एविएशन, टूरिज्म एंड पिलग्रिमेज डेवलपमेंट।



जीरापुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जनपद पंचायत अध्यक्ष कालू सिंह तोमर, दांगी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व विधायक हजरीलाल दांगी, नगर पालिका उपाध्यक्ष हेमंत जोशी, भाजपा मंडल अध्यक्ष विष्णु पवार, भाजपा जिला मंत्री ईश्वर तोमर, राजगढ़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नम्रता बहन।



वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। पार्थ ब्रह्मभट्ट, फायर कंट्रोल सेंटर डिप्टी चीफ फायर ऑफिसर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. वंदना बहन तथा ब्र.कु. नरेन्द्र भाई।



सटाणा-महा.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में राहुल सोनोन सटाणा भाजपा शहर अध्यक्ष तथा सटाणा दक्षिण सोसाइटी के चेयरमैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। साथ ही ब्र.कु. अंजू बहन, ब्र.कु. सोनू बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।



जबलपुर-बरेला(म.प्र.)। नगर परिषद बरेला द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण एवं नगर के मेधावी छात्रों को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सभी को ईश्वरीय संदेश दिया गया तथा नगर के नवनिर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं पार्षदों के द्वारा छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

मनुष्य-परमात्मा की न्यायी, अजन्मा और अभोक्ता तो है नहीं; वह तो माता के गर्भ से जन्म लेता है और जन्म लेते ही वह इस संसार के जलवायु, दुग्ध तथा हवा का सेवन अथवा भोग करने लगता है और निरपवाद(बिना अपवाद का) रूप से अपने दैहिक माता-पिता और उनके द्वारा दूसरों से उसके सम्बन्ध भी स्थापित हो ही जाते हैं। कोई भी मनुष्य इनसे बच नहीं सकता क्योंकि शरीर के विकास के लिए और उसे सशक्त बनाये रखने के लिए उसे भक्ष्य और पेय या भोजन और पदार्थ तो चाहिए ही और प्रारंभ ही से, शिशु अवस्था से, उसका लालन-पालन, शिक्षण-प्रशिक्षण करने के लिए सम्बन्धी भी चाहिए ही। इस प्रकार उसे सम्बन्ध और समाज की तथा भोग्य और पदार्थों की आवश्यकता तो होती ही है।

अब देखने की बात यह है मनुष्य की इच्छा-तृष्णाएँ, उसके संकल्प-विकल्प, उसके कार्य-कलाप और कर्म-विकर्म, उसके मन, वचन और कृत्य-अकृत्य भी या तो भोग्य पदार्थों से या सम्बन्धों से जुटे होते हैं। इनको छोड़कर वह और किसी विषय पर यदि चिंतन करता भी है तो उस चिंतन में इन सम्बन्धों की पुट तो होती ही है। वास्तव में मनुष्य का सुख-दुःख, सुविधा-असुविधा, साहित्य-कला सब इन्हीं दो से- भोग्य पदार्थों और दैहिक-सम्बन्धों से ही जुटे होते हैं। उसकी आशा-निराशा, स्वप्न-स्मृतियाँ सभी इसी धुरी पर घूमती हैं। इनका प्रारंभ तो बहुत सरल, स्वाभाविक और सहज तरीके से होता है। परंतु आगे चलकर यही जटिल, बंधनकारी, बोझिल और दुःस्वोत्पादक बनते जाते हैं।

इसलिए ही ईश्वरीय ज्ञान, योग, दिव्यगुणों की धारणा तथा सेवा की आवश्यकता होती है ताकि ये सम्बन्ध और पदार्थों का भोग हमारे लिए रोग-शोक, कष्ट-क्लेश, दुःख और बंधनों का कारण न बनें। मनुष्य मुक्ति और जीवनमुक्ति की जो कामना करता है, वह इन्हीं भोगों और सम्बन्धों ही से पैदा होने वाले दुःखों से छुटकारा पाने की इच्छा को लेकर होता है। वह परमात्मा से योग इसलिए लगाता है कि इन भोगों और सम्बन्धों के संसर्ग(प्रेम) से उत्पन्न विकर्मों और विकारों का नाश कर सके। वह दिव्यगुणों की धारणा भी इसलिए ही करना चाहता है कि वह भोग-विलास से ऊपर उठकर और सम्बन्धों को सदगुण-युक्त बनाकर, सुखकर बनाये और उनमें दुर्गुण रूप जो दुःख का कांटा है, उसे निकाल फेंके। वह सेवा वृत्ति, सेवा भावना और सेवा रूप कर्म को भी इसलिए अपनाता चाहता है कि उसके सम्बन्ध केवल सेवा-भाव पर टिके हों और वह उनके जाल में फंस न जायें। इस प्रकार, अध्यात्म की भी सारी चर्चा ही इन भोगों और सम्बन्धों की बात को ठीक करने के लक्ष्य ही से हैं।

इसी संदर्भ में यहाँ कुछेक बातों का उल्लेख उपयोगी होगा। यद्यपि वे सामान्य एवं साधारण

एकांत का सौंदर्य क्या होता...!!

दुनिया के अन्दर लोग एकांत में रहना नहीं चाहते हैं। पर अभी विशेष लॉकडाउन के समय तो हरेक ने महसूस किया कि एकांत माना वो समझने लगे अकेलापन। और उस अकेलापन में कई लोग डिप्रेशन में भी गये। दुनिया के अन्दर डिप्रेशन का आँकड़ा भरता गया, क्योंकि लोगों को जैसे कोई है नहीं, किसके साथ बात करें तो इसीलिए जो है एकांत भाता नहीं है। लेकिन हम बाबा के बच्चों को एकांत बहुत अच्छा लगता है। क्यों? क्योंकि इसमें हम अपनी जितनी उन्नति करना चाहें, जितनी अपनी प्रोग्रेस करना चाहें वो हम सहजता से कर सकते हैं। एकांत का मतलब क्या? जब कहते हैं एकांत का सौंदर्य। तो उसका सौंदर्य क्या है? ऐसे कई बार बाबा ने उसका अर्थ बताकर कहा है कि एकांत माना एक के अंत में खो जाना। लेकिन एक के अंत में खोने के लिए हमें सुन्दर विचार चाहिए। क्यों सुन्दर विचार चाहिए ताकि अन्दर में कहीं वो डिप्रेशन वाले, कमजोरी के विचार न आयें। जैसे डिप्रेशन में लोग जाते हैं तो वो सभी को अपने आप से दूर कर देते हैं। और एकांत में ही फिर निगेटिव सोचते रहते हैं। इसी कारण से वो डिप्रेशन में जाते हैं। और एकांत के सौंदर्य का अनुभव नहीं कर पाते।

एकांत का अनुभव करने के लिए बहुत सुंदर विचार चाहिए। और उसमें भी जब एक बाबा के अंत में खोना है तो खुशी में जैसे बाबा कहता है ना कि मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों में खुश रहो, हल्के रहो। तो जितना अन्दर में खुशी होगी उतना एकांत बहुत अच्छा लगेगा। खुशी वाले संकल्प हों, और खुशी-खुशी से जब हम बाबा की याद में समाते हैं तो जैसे उसका आनंद अलौकिक होता है। इसीलिए ये एकांत का सौंदर्य अनुभव करने के लिए सबसे पहले खुशी के आधार पर आनंद की स्थिति में अपने आप को स्थित करना। उसी आनंद से नींद नहीं आयेगी, निगेटिव विचार नहीं चलेंगे और सहजता से हम उसमें समा जायेंगे। बाबा की याद में बहुत अन्दर में मज्जा आयेगा।

दुनिया में जब ऋषि-मुनियों ने एकांत का



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अनुभव किया, अगर उसका विज्ञान मैं आपके दिमाग में उत्पन्न करने के लिए कहूँ तो क्या अनुभव होगा? क्या विज्ञान बनेगा, क्या चित्र आपके सामने आयेगा। ऋषि-मुनि एकांत में बैठा है, कहाँ बैठा होता है? गुफा में बैठा होता है या हिमालय पर बैठा होता है ऐसे ही एक चित्र सामने आता है। इसीलिए हमें बाबा भी कहते हैं कि तुम्हें एकांत का अनुभव करने के लिए गुफा में बैठ जाना है, हमारी गुफा कौन-सी है? भीतर जाना। आत्मा की भृकुटि की ये गुफा है। इसीलिए हमें कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारा एकांत अन्दर में है। और जितना आत्मा के, उस भृकुटि के मध्य की गुफा में हम अपने आपको ले चलें और गुफा में बैठते हैं तो एकदम साइलेंस। जैसे लोग हिमालय आदि पर चले जाते हैं तपस्या आदि करने के लिए, एकांत में बैठ जाते हैं। अर्थात् हर प्रकार के आवाज से दूर हो जाना। लेकिन अगर अन्दर में बहुत आवाज हो तो क्या करेंगे? अन्दर में ही व्यर्थ संकल्पों का आवाज हो तो क्या करेंगे कहाँ जायेगा व्यक्ति? इसीलिए बाबा कहते हैं कि तुम्हें शरीर से कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है, कहीं हिमालय पर जाने की जरूरत नहीं है लेकिन हम अपने मन को भीतर ले जायें और उस भृकुटि की गुफा में साइलेंस बैठ जायें। लेकिन साइलेंस भी कैसी, खुशी वाली साइलेंस।

आनंद वाली साइलेंस जिसको कहा जाता है स्वीट साइलेंस। एक है डेड साइलेंस। हमें डेड साइलेंस में नहीं जाना है। हमें स्वीट साइलेंस में बैठना है। बहुत मीठी वो अवस्था

हो अन्दर की, खुशी की अवस्था हो, आनंद की अवस्था हो उसको कहते हैं स्वीट साइलेंस। तो उस गुफा में अन्दर जाना है। उस समय मन को एकाग्र करना है बाबा के उस स्वरूप पर। याद आता है कि जब पहली बार शिव बाबा का अवतरण हुआ ब्रह्मा बाबा में, तो बाबा ने सबसे पहले अपने परिचय में क्या कहा? निजानंद स्वरूपम शिवोहम... शिवोहम... बाबा की अनंत महिमा है लेकिन उस समय में भी भगवान ने अपना परिचय दिया कि मैं निजानंद स्वरूप हूँ। मैं नित्यानंद स्वरूप हूँ और इसीलिए दुनिया में भी लोगों ने इसी को ही हाइएस्ट अचीवमेंट कहा। सर्वश्रेष्ठ अगर प्राप्ति है राजयोग की तो वो है निजानंद का अनुभव करना, क्योंकि उससे क्या होता है अतीन्द्रिय सुख जो आज तक मनुष्य इन्द्रियों के सुख के पीछे भागते रहे, उसका अनुभव करने के लिए भागते रहे, उसमें आनंद दूँढते रहे, लेकिन जब आत्मा निजानंद के स्वरूप में हो तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा और एकांत माना निरसता नहीं, अकेलापन नहीं, लेकिन एकांत माना अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना। इसीलिए निजानंद स्वरूप का भगवान ने जो परिचय दिया, इसीलिए बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने भी उसे अनुभव करना चाहा। आनंद को सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है? क्योंकि आनंद का कोई अपोजिट नहीं है। जैसे सुख का अपोजिट दुःख है, खुशी का अपोजिट उदासी है, हर एक चीज़ का अपोजिट मिलेगा। लेकिन आनंद का कोई अपोजिट नहीं, आनंद माना आनंद। तो इसीलिए वो सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति मानी गई।

ब्रह्मा बाबा के कई ऐसे चित्र बने हुए हैं जो देखते हैं कि बाबा पहाड़ों पर ऐसे हाथ रखके बैठे हुए हैं, कैसे एक आनंद की स्थिति में खोए हुए हैं। 93 वर्ष की आयु में बाबा को कहीं झुटका आ गया हो ऐसा नहीं हुआ। क्यों? क्योंकि बाबा उस परम आनंद में रहते थे। मनसा-वाचा-कर्मणा खुशी में रहते थे। इसीलिए जब बैठते थे तो परमआनंद की स्थिति में सहजता से अन्दर चले जाते थे। ये है एकांत।



शुजालपुर-म.प्र.। शिक्षा मंत्री एवं विधायक इन्द्रसिंह परमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. प्रिया बहन, ब्र.कु. शिवम भाई, ब्र.कु. रितानु भाई तथा अन्य।



कटनी-म.प्र.। 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में विधायक संदीप जायसवाल, महापौर श्रीमति प्रीति संजीव सूरि, पूर्व महापौर शशांक श्रीवास्तव, वार्ड पार्षद अवकाश जायसवाल, मानव अधिकार आयोग के जिला संयोजक डॉ. देवनाथ, नगर निगम अध्यक्ष मनीष पाठक, वरिष्ठ डॉ. चांडक जी तथा ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



रतलाम-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर औद्योगिक थाना क्षेत्र के टीआई ओ.पी. सिंह एवं समस्त स्टाफ को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. मनोरमा बहन एवं ब्र.कु. आरती बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन,
तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prapajita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR

Whatsapp, Telegram No.:- 9414712087

ALL-IN-ONE QR

Paytm
Accepted Here

Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App



Wallet or Bank A/c



Any Debit or Credit Card



Paytm Postpaid



BHIM UPI



नरसिंहपुर-हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी(म.प्र.)। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद नरसिंहपुर के तत्वाधान में महर्षि श्री अरविंद घोष की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित व्याख्यानमाला में ब्रह्माकुमारीज नरसिंहपुर को मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र जामदार, जबलपुर विधायक जालम सिंह पटेल, नगर पालिका अध्यक्ष पंडित नीरज महाराज आदि महानुभावों द्वारा सामाजिक कार्य जैसे वृक्षारोपण एवं शाश्वत यौगिक जैविक कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पीजी कॉलेज ऑडिटोरियम में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत स्थानीय बाबूराम चतुर्वेदी स्टेडियम में फुल ट्रेस रहसिल पेरुड के दौरान ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया जाने पर वहाँ उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं पुलिस स्टाफ को ब्रह्माकुमारी बहनों ने रक्षासूत्र बांधा। इस मौके पर एसपी विक्रम सिंह, एसडीएम विनय द्विवेदी, तहसीलदार अभिनव शर्मा, रक्षित निरीक्षक कैलाश पटेल, एनसीसी 25 बटालियन के सुबेदार मेजर कुलवंत सिंह, नायब तहसीलदार अंजू लोधी, स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम के उद्घोषक प्रमोद त्रिपाठी सहित म.प्र. पुलिस छतरपुर, होमगार्ड छतरपुर, एनसीसी 25 बटालियन के साथ एमएलबी छतरपुर स्काउट की टीम तथा सिविल लाइन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. सुमन बहन आदि उपस्थित रहे।



इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। क्षेत्र क्र. 4 की नवनिर्वाचित पार्षद बहन कंचन गिदवानी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं ब्र.कु. शशि दीदी, योगेश राजदेव तथा अन्य।



बिलासपुर-राज किशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज के शिव-अनुराग भवन सेवाकेन्द्र में 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित सामूहिक कार्यक्रम में छ.ग. योग आयोग के सदस्य रविन्द्र सिंह, पूर्व सदस्या, ब्र.कु. मंजू दीदी, टिकरापारा, नरियरा, मस्तूरी आदि क्षेत्रों की ब्रह्माकुमारी बहनों सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



खण्डवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के भाग्योदय भवन सेवाकेन्द्र द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित देशभक्ति से ओतप्रोत विशाल तिरंगा वाहन रैली का शुभारंभ स्थानीय सेवाकेन्द्र से होकर एलआईजी कॉलोनी में समापन हुआ। इस रैली में बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

कुमारियों प्रति....

निश्चय अगर पक्का तो परिवर्तन निश्चित

हम सभी ने जीवन का अध्यात्म मार्ग पसंद किया है बहुत बड़ी बात है। जरूर वो संस्कार आत्मा में हैं। आजकल हम देखते हैं कि छोटे बच्चे कथा करते हैं, गाड़ी चलाते हैं, कोई म्यूजिक बजाते हैं, मास्टर होते हैं। तो कहते हैं कि पूर्व जन्म से ये कला लेकर आये हैं। आप सभी ने भी अपने युवा काल में, किशोर आयु में, बचपन में ही ज्ञान को पाकर जीवन में धारण किया। हमें सदा अपने आप में लक्ष्य रखना है कि जो भी मार्ग चुनें उसमें विशेष बनना है, साधारण नहीं। पढ़ना है तो फर्स्टक्लास पढ़ना है। जो भी हुनर सीखना है वो फर्स्टक्लास सीखना है। बेशक जो च्वाइस आप करते हैं वो अच्छी तरह से आदि-मध्य-अन्त सोच-समझकर करें। थोड़ा टाइम भले लीजिए लेकिन अच्छी तरह विस्तार से बाबा के ज्ञान को, योग को, धारणाओं को, सेवा को, दिनचर्या, नियम, मर्यादा, संगठन, ये सारी चीजें अच्छी तरह समझिये। एक बार फाइनल कर लेने के बाद फिर पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। घड़ी-घड़ी निर्णय बदलने में, लक्ष्य बदलते रहने में काफी टाइम वेस्ट होता है। घड़ी-घड़ी मन बदले नहीं। बाबा का ज्ञान और योग वास्तव

में जीवन जीने की कला है। जीवन पद्धति है, लाइफ स्टाइल है। इसमें हमें अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। न अपने आप को धोखे में रखना है और न ही माँ-बाप को। करेंगे, चलेंगे, देखेंगे, क्योंकि अन्दर खुद का निर्णय नहीं है तो हम टाइम पास करते रहते हैं। बाबा के ज्ञान में कोई अंधश्रद्धा नहीं है, बाबा का ज्ञान सत्य है, विवेकसंगत है। आप खुद अच्छी रीति अध्ययन करें, अभ्यास करें फिर स्वीकारें। फिर पूरा फोकस हो जाइए। फिर ऐसे नहीं कि उसका भी स्वाद ले लें, ये भी रस ले लें, ये भी फायदा ले लें, नहीं। भल आप सेवा करेंगे पर आपका अपना कोई स्वरूप नहीं बनेगा।

बाबा के ज्ञान में शुरू से आप देखिए निश्चयबुद्धि बहुत जरूरी है। निश्चयबुद्धि बनने के बाद ही पुरुषार्थ तीव्र बनता है। नहीं तो व्यक्ति सालों आयेगा, जायेगा पर जब तक निश्चय नहीं भगवान पढ़ाते हैं ब्रह्मा मुख से तब तक भगवान की आज्ञा पर चलने की ताकत नहीं आती, भगवान पर कुर्बान नहीं हो सकते। अगर कुछ बनना है तो बाबा का राइट हैंड बनो, माना स्पेशल बनना है। राइट हैंड किसको कहते हैं जो विश्वास के पात्र होते हैं, जिम्मेवार, एवररेडी, राइटियस जीवन। कोई करे न करे ये मेरा राइट हैंड है ये

करेगा। कारण नहीं, बहाने नहीं, कोई करे न करे राइट हैंड माना मैं करूंगा, आप निश्चित रहिए। अगर ऐसा बनना है तो बाबा माना बाबा, बस एक पर फोकस। ज्ञान योग माना ज्ञान योग। और इच्छाये नहीं, और शौक नहीं, और रस नहीं। बाबा में ही सबकुछ। क्योंकि जितनी और हॉबिज़ हैं उतना आपका व्यक्तित्व विभाजित

प्राचीन काल में ही शिक्षा प्रणाली में जीवन की शुरुआत के 25 वर्ष ब्रह्मचर्य श्रम की स्थिति में ही विद्या अध्ययन करते थे, क्योंकि पवित्रता बुद्धि को एकाग्र रखती है।

होता है। इसलिए क्यों प्राचीन काल में ही शिक्षा प्रणाली में जीवन की शुरुआत के 25 वर्ष ब्रह्मचर्य श्रम की स्थिति में ही विद्या अध्ययन करते थे, क्योंकि पवित्रता बुद्धि को एकाग्र रखती है। बात वो नहीं है कि आप घर में रहते हैं या सेंटर में, बात ये है कि आपका पक्का निर्णय हो कि जीना कैसे है। घर में रहें तो भी हम पक्के ब्रह्माकुमार-कुमारी हो। हमारी दिनचर्या वही हो। लाइफ

की डिस्प्लिन तो दृढ़ होनी चाहिए ना! घर में रहते भी आप पक्के योगी दिखने चाहिए, सच्चे वैरागी नजर आने चाहिए। अगर वो नहीं है तो फिर क्या हम ज्ञान में चलते हैं! राइट हैंड माना राइटियस जीवन। जीवन हमारा सही हो। तो अपने आपको चेज करना है। खुद के पीछे मेहनत करो। तकलीफ तो हमें भी हुई थी शुरू में। 16 साल के बाबा के घर में आये 3:30 बजे उठने का किसको अभ्यास होगा! तो देखो सच में ज्ञान समझा है, योगी जीवन जीना है, आध्यात्मिक बनना है, लौकिक सांसारिक जीवन नहीं जीना है तो पहला परिवर्तन दिनचर्या में है, क्योंकि दिनचर्या बदलने से योगी जीवन का एहसास होगा।

जीवन क्या है आज और कल। जीवन श्रेष्ठ बनाना है, जीवन सफल करना है तो रोज सफल करना है। तो लगेगा कि हाँ ये ज्ञान में चलते हैं। जिस बात के हैबिचुअल (आदती) हो जाते हैं उसे बदलने में तकलीफ होगी। पर महत्त्व समझेंगे, दृढ़ता रखेंगे और लगे रहेंगे तो परिवर्तन होगा। फिर इजी हो जाता है, मुश्किल नहीं लगता। अगर हमें क्वालिटी वाली पक्की ब्रह्माकुमारी लाइफ जीनी है, तो हमें ये करना होगा। अपनी दिनचर्या पर ध्यान देना है। क्योंकि लक्ष्य अगर पक्का है तो परिवर्तन निश्चित है।

- क्रमशः



मुम्बई-घाटकोपर। माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, योग भवन, घाटकोपर सबजोन। साथ ही दीदी ने माननीय मुख्यमंत्री को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।



छोटा उदेपुर (गुज.)। नारण भाई राठवा, राज्य सभा सांसद, छोटा उदेपुर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ब्लेसिंग कार्ड देते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. मोनिका दीदी। साथ हैं ब्र.कु. गीता बहन, मा.आबू।



बरेला-जबलपुर (म.प्र.)। नव निर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष रामेश्वर शुजी का पगड़ी शॉल एवं श्रीफल से सम्मान करने के पश्चात् ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनिता बहन।



भुज-कच्छ (गुज.)। कच्छमित्र दैनिक के तंत्री दीपकभाई माकड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना बहन। साथ हैं ब्र.कु. बीना बहन।



अम्बाजी-गुज.। रोहरी क्लब प्रमुख ओ.पी. शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपिका बहन।



सिकंदराबाद-आ.प्र.। मोंडा मार्केट डिविजन कॉर्पोरेटर कौथम दीपिका को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी।



बारडोली-गुज.। पीएस नंदलाल एम.प्रजापति को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अरुणा बहन। साथ हैं ब्र.कु. हर्षिता बहन, ब्र.कु. ममता बहन व अन्य।



अहमदाबाद-इसनपुर। जयेश ठक्कर, प्रिंसिपल, वीवी पटेल विद्यामंदिर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जागृति बहन।



कामठी-महा.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में असम राइफल की डेप्युटी कमांडेंट बहन करुणा गायकवाड़, बीएसएफ के जवान शेषराव अडाऊ, नूतन सरस्वती विद्यालय की तत्कालीन मुख्याध्यापिका गिरि मैडम, प्रा. मधुकर गिरी सर, केन्द्रीय विद्यालय की अनीता लिंगय्या मैडम, विमलताई साबळे, सरपंच मंगला कारेमोरे, सुषमा राखडे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. चंद्रकला बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



पुणे-पिंपरी (महा.)। सेंट्रल ऑर्डिनंस फैक्ट्री के सभी अधिकारी एवं स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. बहनें एवं भाई।



कटनी-म.प्र.। भाजपा के जिला अध्यक्ष रामरतन पायल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट में आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सविता बहन।



वडोदरा-मंगलवाड़ी (गुज.)। जितुभाई सुखडिया, धारासभ्य बीजेपी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. वंदना बहन।



खरगोन-म.प्र.। जिला उप जेल मण्डलेश्वर में जेल अधीक्षक एश्वर्य मिश्रा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सीगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंगला बहन।



भिलाई-छ.ग.। दैनिक भास्कर के ब्यूरो चीफ राज किशोर भगत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. इंद्राणी बहन। साथ हैं ब्र.कु. गायत्री बहन।



चिलोडा-गुज.। जीईबी पॉवर स्टेशन में एक्जीक्यूटिव इंजीनियर एवं कर्मचारियों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तारा दीदी।



राजकोट-रविरत्न पार्क (गुज.)। सेवाकेन्द्र पर भाजप के समाजसेवी कार्यकर्ताओं के लिए आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. डिम्पल बहन, भाजप प्रमुख विक्रम भाई, कॉर्पोरेटर आशा बहन तथा अन्य।

खसखस का दाना है छोटा... पर काम करता बड़ा



खसखस छोटे तिलहन होते हैं, जो पॉपी नामक पौधे से मिलते हैं... पॉपी सीड्स या खसखस दुनिया भर में अलग-अलग किस्मों में उपलब्ध होता है। खसखस नीले और सफेद दो तरह का होता है। ये भारत में सबसे कॉमन सफेद रंग का मिलता है। ये राई जैसे छोटे-छोटे दानों के रूप में होता है। इसमें कई तरह के पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जो हमारी सेहत को ढेरों लाभ पहुंचाते हैं।

हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि खसखस के बीजों में ओमेगा-6 फैटी एसिड, कैल्शियम, मैग्नीशियम और

स्वास्थ्य

फाइबर की अच्छी मात्रा होती है। आइए जानते हैं इसके फायदों के बारे में...

नींद की परेशानी दूर होगी

खसखस नींद से जुड़ी समस्याओं से राहत देता है क्योंकि इसके सेवन से नींद आसानी से आती है। अगर आप भी अनिद्रा की समस्या से परेशान हैं तो सोने से पहले खसखस के पेस्ट को गर्म दूध के साथ लेंगे तो राहत मिलेगी।

आँखों की सेहत को बनाए रखें

खसखस आपकी आँखों की सेहत को

भी बेहतर बनाए रखता है क्योंकि इसमें जिंक और एंटीऑक्सीडेंट भी होता है जो कि दृष्टि में सुधार करने और मैकुलर डिजनरेशन जैसी आँखों की बीमारियों से बचाने में मदद करती है। इसलिए खसखस को आँखों के लिए अमृत माना गया है।

हड्डियों को बनाता मजबूत

हड्डियों को मजबूत बनाने में खसखस आपकी मदद करता है। आप सुबह खाली पेट इसका सेवन कर सकते हैं। खसखस के बीजों में मौजूद मैग्नीज और प्रोटीन कोलेजन के उत्पादन में मदद करता है जो हड्डियों को गंभीर क्षति से बचाता है। आप खाली पेट दूध के साथ इसका सेवन करें।

दूर होती कब्ज की समस्या

अगर आपको कब्ज और पेट की समस्या है तो आप खसखस का सेवन कर सकते हैं। खसखस के बीजों में फाइबर का अधिक मात्रा में होना मल में थोक जोड़ता है, जिसमें पेट साफ करने में मदद मिलती है। ये डाइटरी फाइबर से भरपूर होता है, जो पाचन तंत्र

को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है। जब आप खसखस जैसे ज्यादा फाइबर से भरपूर चीजों को खाते हैं, तो इसमें पानी को जोड़ने में मदद मिलती है। इससे आपका पेट आसानी से साफ हो जाता है।

मुंह के छालों को करता कम

खसखस मुंह के छालों के लिए भी फायदेमंद होता है। खसखस के बीजों का सुबह खाली पेट सेवन करना मुंह के छालों का कारण इलाज है। खसखस के बीजों को भिगोकर रखें और इसमें शहद मिलाने के बाद इसका सेवन करें। ऐसा करने से जीभ की जलन भी खत्म होगी।

ब्लड प्रेशर कम करने में

मददगार

खसखस आयरन से भरपूर होता है जो ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर बनाता है। इसके सेवन से ब्लड प्रेशर का लेवल नियंत्रित रहता है और इनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड भी होता है, जो हृदय रोगों

की संभावना को कम करने में फायदेमंद होता है।

प्रोटीन का अच्छा स्रोत

खसखस के बीज ओमेगा-4 फैटी एसिड, प्रोटीन, फाइबर का अच्छा स्रोत हैं। इसके अलावा इसमें विभिन्न फाइटोकेमिकल्स, विटामिन बी, थायमिन, कैल्शियम और मैग्नीज भी होता है इसलिए खसखस को एक उच्च पोषण वाला आहार माना जाता है।

सांस की दिक्कत करे दूर

खसखस के बीज सांस की बीमारियों के इलाज में बहुत कारगर हो सकते हैं। यह खांसी को कम करने में मदद करता है और अस्थमा जैसी समस्याओं के खिलाफ लंबे समय तक राहत प्रदान करता है।

यहाँ दी गई जानकारी सामान्य मान्यताओं और जानकारीयों पर आधारित है। इस तरह के किसी भी उपचार, दवा, डाइट पर अमल करने से पहले डॉक्टर की सलाह जरूर लें।



इंदौर-सुदामा नगर से.डी.(म.प्र.)। नगर पुलिस आयुक्त बी.पी.एस. परिहार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दामिनी बहन।



मुंबई-घाटकोपर सबजोना। ब्रह्माकुमारीज के योग भवन सेवाकेन्द्र की ओर से एमएनएस युवा लीडर अमित ठाकरे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रमिला बहन एवं ब्र.कु. प्रतिभा बहन।



चिलोडा-गुज.। बीएसएफ के आईजी जी.एस. मलिक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कैलाश दीदी। साथ हैं ब्र.कु. तारा बहन तथा अन्य।



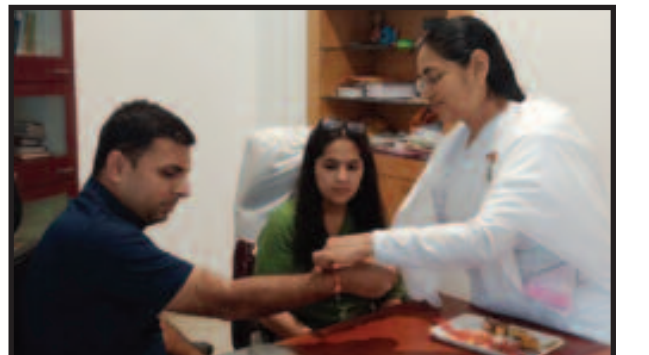
मंदसौर-म.प्र.। कलेक्टर गौतम सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा बहन।



मुंदरा-कच्छ(गुज.)। क्राइम ब्रांच ऑफिसर ए.एन. पट्टनी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वर्षा बहन। साथ हैं ब्र.कु. हेतल बहन।



मरोली बाजार-नवसारी(गुज.)। महूवर ग्राम पंचायत में सरपंच श्रीमति योगिना पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन।



राजगढ़-म.प्र.। कलेक्टर के निवास स्थान पर कलेक्टर हर्ष दीक्षित एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमति वागीशा बहन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु बहन।



सिकंदराबाद-आ.प्र.। कमांडेंट ए.ओ.सी. सेंटर ब्रिगेडियर अजीत देशपांडे सहित सौ जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वनीता बहन।



सिरसी-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिरसी कोर्ट कर्नाटक, बार एसोसिएशन सिरसी में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में वी. जगदीश, फर्स्ट एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन जज, यू.के. करवार, कमलाक्षा डी., सीनियर सिविल जज एंड प्रिंसिपल, जेएमएफसी, सिरसी, राजू के. शेडबालकर, प्रिंसिपल सिविल जज एंड फर्स्ट एडिशनल जेएमएफसी, सिरसी, अभिषेक आर. जोशी, फर्स्ट एडिशनल सिविल जज एंड सेकंड एडिशनल जेएमएफसी, सिरसी, श्रीमति श्रुति वी., सेकंड एडिशनल सिविल जज एंड थर्ड एडिशनल जेएमएफसी, सिरसी, सी.एफ. इश, प्रेसिडेंट, बार एसोसिएशन सिरसी आदि को स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गायत्री दीदी व अन्य ब्र.कु. बहनों द्वारा रक्षासूत्र बांधा गया। इस मौके पर ब्र.कु. बलवंतराव व बार एसोसिएशन के मेम्बर्स उपस्थित रहे।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत जन जागृति के लिए भव्य तिरंगा रैली निकाली गई। इस अवसर पर छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, ब्र.कु. रमा बहन, ब्र.कु. माधुरी बहन सहित लगभग 225 भाई-बहनें शामिल रहे।



खजुराहो-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट खजुराहो में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में एयरपोर्ट के सभी डिपार्टमेंट्स एवं सीआईएसएफ के साथ ब्रह्माकुमारीज की बहनों एवं भाइयों ने स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन का कार्यक्रम मनाया। इस मौके पर प्रदीप कुमार वैज, एपीडी, सेंगर साहब, एसी सीआईएसएफ, बहन उर्वशी शाह, नवनिपुण एसी सीआईएसएफ, नारायण प्रसाद कोरी, डीजीएम सिविल, राजाराम जी, एजीएम-एटीसी, कमल किशोर जी, सीनियर मैनेजर इलेक्ट्रिक, सुखदेव राय, सीनियर मैनेजर एच आर, राहुल वर्मा, सीनियर मैनेजर, फिनान्स, हरकेश कुमार, मैनेजर फायर, पुरुषोत्तम दास, एडीएस मैनेजर फायर, प्रशांत गुप्ता, मैनेजर टर्मिनल, आबिद अली, सचिव, एएईयू, निरंजन कुमार शर्मा, संचालक, श्री विजय प्रभारी स्पाइसजेट खजुराहो, राजयोगिनी ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

श्रेष्ठ कर्म • जब तक हम आंतरिक स्थिति को नहीं बदलते तब तक बाहर की स्थिति बदल नहीं सकती

मीडिया मनोरंजन नहीं बल्कि एक ज़िम्मेवारी



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

लेकिन थोड़े टाइम के बाद फिर से वापिस हम चेंज हो जाते हैं। हम सब ने परिवर्तन करने की कोशिश की है, लेकिन हम सब यह फील करते हैं कि दो दिन, चार दिन, दो महीने उसके बाद हम वापिस पुराने संस्कारों की तरफ चले जाते हैं। हमारे कर्मों से हमारा भाग्य बनता है। यह तो नहीं सोचते कि हमारा भाग्य परमात्मा लिख रहे हैं। क्योंकि जब भी जीवन की कोई बात आती है तो हम ऊपर की तरफ देखते हैं। और हम कहते हैं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? परमात्मा ने मेरे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? तो हमारे कर्मों से हमारा भाग्य बनता है। और हमारे कर्मों का प्रभाव कितनी आत्माओं पर पड़ रहा है उससे हमारा भाग्य बनता जाता है।

यह कहना नहीं चाहेंगे। अगर मीडिया उनको ऐसी खुराक देना शुरू कर दे जिससे उनके मन की स्थिति शक्तिशाली हो तो हम उनको कहेंगे मीडिया से और ज्यादा सुनो, पढ़ो और देखो। लेकिन अगर छोटे-छोटे बच्चों के मन की स्थिति इतनी हिल रही है कि उनको एंग्जाइटी (तनाव) और डिप्रेशन और पैनिक अटैक (भय का दौरा) हो रहा है। तो हमें उनको कहना पड़ता है कि आप फोन, टीवी और इंटरनेट से जो ले रहे हैं उसको बंद कर दो। क्योंकि यह एक लॉ है कि जो हम सुनते, पढ़ते, देखते हैं उससे ही हमारी सोच बनती है, वो ही हम बनते हैं। इसीलिए जिनको अपनी सोच की क्वालिटी को चेंज करना है उनको अपने कंटेंट (विषय) को चेंज करना पड़ता है। फिर सारा दिन जो कंटेंट सबको दे रहे हैं उनकी सोच पर कितना असर पड़ता होगा! जब हम अपनी स्थिति को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेंगे तो अपने रोल में कुछ चेंज लाना नहीं पड़ेगा, आपके रोल में चेंज अपने आप आना शुरू हो जायेगा। आगे चॉइस हमारी है कि हमने क्या खिलाना है लेकिन उस प्रोफेशन से हम धन कमाते हैं। वो धन हमारे परिवार की पालना करता है। उस धन से हमारे घर का अन्न खरीदा जाता है, उस अन्न का असर परिवार के मन पर होता है और मन का असर तन पर होता है। तो सबसे इम्पोर्टेंट (महत्वपूर्ण) एनर्जी जो घर के अन्दर होती है वो होती है धन, लेकिन धन मतलब कितना धन नहीं, कैसे कमाया हुआ धन। अगर वो धन किसी को दुःख और दर्द देकर आता है। उस धन के साथ वो वायब्रेशन आ जाते हैं। लेकिन अगर वो धन किसी को सुख और शक्ति देकर आता है तो उसके साथ दुआओं कि एनर्जी आ जाती है। तो हो सकता है अगर हम न्यूज पॉजिटिव बनाते हैं या कोई समाचार को बहुत पॉजिटिव तरीके से लिखते हैं, बात वो ही होगी लेकिन लिखने का तरीका अगर अलग होगा हो सकता है कि उसके पाठक थोड़े कम हो लेकिन थोड़े कम पाठकों में भी आपके घर में दुआयें ज्यादा आयेंगी। हमें वो लीडरशीप क्वालिटी बनना है। हमें वो बनना है 'पॉवर ऑफ वन' एक की शक्ति। हम कहते हैं सिर्फ मेरे पॉजिटिव लिखने से क्या होगा बाकि तो कोई लिखता नहीं, लेकिन पहले एक तो हिम्मत करे, शुरुआत एक से ही होती है। एक के हिम्मत से ही परिवर्तन होता है।

हम सब एक महान परिवर्तन की तरफ चल चुके हैं। समाधान तो छोटी चीज होती है कि समस्या आयी उसका समाधान किया लेकिन एक ऐसा होता है कि महान परिवर्तन हो जहाँ सृष्टि की सारी समस्यायें ही खत्म हो जाती हैं। तो हम सब परमात्मा के वो फरिश्ते हैं जो कलियुगी दुनिया में रहते हुए सतयुगी संस्कार, सतयुगी संस्कृति और सतयुगी संसार का निर्माण करने के लिए सक्षम हैं। परमात्मा के चुने हुए बच्चों को ही परमात्मा अपने घर में बुलाता है तथा श्रेष्ठ कर्मों के फल स्वरूप ही हम यहां आ पाते हैं।

श्रेष्ठ कर्म करने की विधि सीख कर हम सभी देश और विश्व का भाग्य परिवर्तन करने वाले कर्म कर सकते हैं। समाधान यहीं से शुरू होगा क्योंकि कोई भी समाधान बाहर से नहीं आंतरिक स्थिति से होता है। जैसे ही हमारी आंतरिक स्थिति परिवर्तित होती है, हम जो करते हैं वो बदलना शुरू हो जाता है। जब तक हम आंतरिक स्थिति को नहीं बदलते और बाहर बदलने की कोशिश करते हैं कि हम ऐसे सोचेंगे, ऐसा नहीं सोचेंगे हम इस तरह से बात करेंगे, हम इस तरह से नहीं बोलेंगे, हम इन शब्दों से लिखेंगे, दूसरे शब्दों का हम उपयोग नहीं करेंगे तो वो थोड़े टाइम रहता है

अकाउन्ट बहुत तीव्र गति से, क्योंकि आपका कार्मिक कनेक्शन एक के साथ नहीं होता, लाखों-करोड़ों के साथ होता है। आप अगर एक ऐसा शब्द लिखते हैं जिससे लाखों लोगों की आत्मिक स्थिति ऊपर की तरफ बढ़ती है। वो सारी दुआयें आप के पास चली जायेंगी। लेकिन अगर हम एक ऐसा शब्द लिखते हैं जिससे लाखों लोगों की स्थिति थोड़ी-सी नीचे आ गई है तो वो वायब्रेशन हमारे पास आयेंगे। लिखनी हमने वो ही बात है जो देश में हुई है, लेकिन लिखने का तरीका, सुनाने का तरीका, भाषा, शब्दों का उपयोग और हमारी स्थिति के वायब्रेशन यह हमारा कर्म है। जो हमारा प्रोफेशन है उसमें हमारी वायब्रेशन कौन-सी जाने वाली है वो हमारा कर्म है और हमारे कर्म से हमारा भाग्य बनता है।

आज जब हम देखते हैं, लोग कहते हैं कि मेरा मन सोचना ही बन्द नहीं करता है। कहते हैं पता नहीं मेरे को निगेटिव थॉट्स इतने क्यों आते रहते हैं तो हम सब उनको एक ही रीज़न (कारण) बताते हैं। आप बहुत ज़्यादा मीडिया सुन-पढ़ रहे हैं। हम उनसे कहते हैं कि आप अगर अपनी मन की स्थिति को सम्भालना चाहते हैं तो मीडिया से कंज्यूम (उपयोग) करना कम कर दो। लेकिन हम



रायपुर-शांति सरोवर (छ.ग.)। माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. वनीषा बहन एवं ब्र.कु. सिमरन बहन।



दुर्ग-छ.ग.। गृह राज्यमंत्री ताम्रध्वज साहू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रुपाली बहन।



गांधीनगर से.28 (गुज.)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री प्रदीप परमार को रक्षासूत्र बांधते हुए गांधीनगर की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी।



पन्ना-म.प्र.। बी.डी. शर्मा, सांसद खजुराहो लोकसभा क्षेत्र व भाजपा प्रदेशाध्यक्ष को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् पौधा भेंट करते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।



चन्द्रपुर-महा.। विधायक किशोर भाऊ जोरगेवार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कुंदा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सीमा बहन।



मालीया हाटीना-गुज.। गवर्नमेंट हॉस्पिटल के मेडीकल ऑफिसर एमडी डॉ. सागर गलचर तथा डॉ. रवि शामला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीता बहन व ब्र.कु. शिल्पा बहन।



इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत ओमप्रकाश भाईजी सभागृह ज्ञानशिखर में आयोजित विशेष कार्यक्रम में सांसद शंकर लालवानी, ब्रह्माकुमारीज इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, अपर कलेक्टर अभय बेड़ेकर, समाजसेवी डॉ. अनिल भण्डारी, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. आस्था बहन, ब्र.कु. अनिता बहन आदि उपस्थित रहे। साथ ही इस मौके पर देशभक्ति से ओतप्रोत विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई।



बैकुंठपुर-छ.ग.। संसदीय सचिव अंबिका सिंह देव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन।



विजयवाड़ा-आ.प्र.। आयुष के कमिश्नर रामुलु जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पद्मजा।



इंदौर-बिजलपुर (म.प्र.)। लक्ष्मी नारायण पटेल, उपाध्यक्ष भाजपा इंदौर को रक्षासूत्र बांधते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. यश्विनी बहन।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता



बहुत समय पहले की बात है। घने जंगल किनारे एक गाँव बसा हुआ था। उस गाँव में दो भाई रहा करते थे। दोनों भाइयों के व्यवहार में बड़ा अंतर था। छोटा भाई बड़े भाई से बहुत प्यार करता था लेकिन बड़ा भाई स्वार्थी, लालची और दुष्ट था। वह छोटे भाई से चिढ़ता था और सदा उससे बुरा व्यवहार किया करता था। बड़े भाई के इस व्यवहार से छोटा भाई दुःखी हो जाता था लेकिन उसके प्रति प्रेम के कारण वह सबकुछ सह जाता था और कभी कुछ नहीं कहता था।

एक दिन बड़ा भाई लकड़ी काटने जंगल गया। वहाँ इधर-उधर तलाशने पर उसकी नज़र एक ऊँचे पेड़ पर पड़ी। आज इसी पेड़ की लकड़ी काटता हूँ ये सोचकर उसने कुल्हाड़ी उठा ली। लेकिन वह कोई साधारण पेड़ नहीं बल्कि एक जादुई पेड़ था। जैसे ही बड़ा भाई पेड़ पर कुल्हाड़ी से वार करने को हुआ, पेड़ उससे विनती करने लगा, “बंधु! मुझे मत काटो, मुझे बख्श दो। यदि तुम मुझे नहीं काटोगे तो मैं तुम्हें सोने के सेब दूंगा।”

सोने के सेब पाने के लालच में बड़ा भाई तैयार हो गया। पेड़ ने जब उसे सोने के कुछ सेब दिए, तो उसकी आँखें चौंधिया गईं। उसका लालच और बढ़ गया। वह पेड़ से और सोने के सेब की मांग करने लगा। पेड़

के मना करने पर, वह उसे धमकाने लगा, “यदि तुमने मुझे और सेब नहीं दिए, तो मैं तुम्हें पूरा का पूरा काट दूंगा।”

यह बात सुनकर पेड़ को क्रोध आ गया। उसने बड़े भाई पर नुकीली सुईयों की बरसात कर दी। हजारों सुईयाँ चुभ जाने से बड़ा भाई दर्द से कराह उठा और वहीं गिर पड़ा। इधर सूर्यास्त होने के बाद भी जब बड़ा भाई घर नहीं आया, तो छोटे भाई को चिंता होने लगी। वह उसे खोजने जंगल की ओर निकल पड़ा।

जंगल

करीब पहुंचा और उसके शरीर से सुईयाँ निकालने लगा। छोटे भाई का प्रेम देखकर बड़े भाई का दिल पसीज गया। उसे अपने व्यवहार पर पछतावा होने लगा। उसकी आँखों से आँसू बह निकले और वह अपने छोटे भाई से माफी मांगने लगा। उसने वचन दिया कि आगे से कभी उसके साथ बुरा व्यवहार नहीं करेगा।

छोटे भाई ने बड़े भाई को गले से लगा लिया। जादुई पेड़ ने भी जब बड़े भाई के व्यवहार में बदलाव देखा तो

हमारा व्यवहार ही हमारी पहचान



उसे ढेर सारे सोने के सेब दिए। उन सोने के सेबों को बेचकर प्राप्त पैसों से दोनों भाइयों ने एक व्यवसाय प्रारंभ किया, जो धीरे-धीरे अच्छा चलने लगा और दोनों भाई सुख से रहने लगे।

पहुंचकर

वह उसे खोजने लगा। खोजते-खोजते वह उसी जादुई पेड़ के पास पहुंच गया। वहाँ उसने बड़े भाई को जमीन पर पड़े कराहते हुए देखा। वह फौरन उसके

अभी सभी से न्यारा बनना है। अपनी देह से ही जब न्यारे बनना है, तो सभी बातों में भी न्यारे हो जायेंगे। अब पुरुषार्थ कर रहे हो न्यारे बनने का। न्यारे बनने से फिर स्वतः ही सभी के प्यारे बन जाते हो। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ न्यारे बनने का होता है। अगर सबका प्यारा बनना है तो पुरुषार्थ क्या करना है? सर्व से न्यारे बनने का। अपनी देह से न्यारे तो बनते ही हो लेकिन आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं उन्होंने से भी न्यारे बनो। प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? और ही प्यारे बनने की बजाय बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे। इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है। कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी जरूर होती है। इस संगठन में अगर कोई न्यारी चीज़ दिखाई दे तो सभी का लगाव और सभी का प्यार उस तरफ

चला जायेगा। तो आप भी न्यारे बनो। सहज पुरुषार्थ है ना! न्यारे नहीं बन पाते हैं, इसका कारण क्या है? आजकल का लगाव सारी दुनिया में किस कारण से होता है? (अट्रैक्शन पर) अट्रैक्शन भी स्वार्थ से है। इस समय का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है। तो स्वार्थ के कारण लगाव और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते। तो उसके लिए क्या करना पड़े? स्वार्थ का अर्थ क्या है? स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देह-अभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है। इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे? उसका सहज पुरुषार्थ, ‘स्वार्थ’ शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे। सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे।



भुज-कच्छ(गुज.)। नगरपति घनश्याम भाई ठक्कर का रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन।



कोरबा-छ.ग। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत ‘हर घर तिरंगा’ अभियान के अंतर्गत आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में ब्र.कु. रुक्मणी दीदी, डॉ. के.सी. देबनाथ, कमल कर्माकर, एस.मूर्ति व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मगोड़ी-गांधीनगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा कमांडेंट ऑफिस में रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर डिप्टी एस.पी. धारिया साहब तथा दो अन्य डिप्टी एसपी सहित 100 से अधिक जवानों को ब्र.कु. कैलाश दीदी, ब्र.कु. तारा बहन, ब्र.कु. कृपल बहन व अन्य ब्र.कु. बहनों ने रक्षासूत्र बांधा एवं प्रतिज्ञा भी कराई।



आनंद नगर-पूर्णा परभणी(महा.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ‘हर घर तिरंगा’ अभियान के तहत ध्वजा वितरण कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रणिता बहन, तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



इंदौर-गंगोत्री विहार। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज द्वारा ‘कल्प तर’ अभियान के अंतर्गत आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में संदीप सेठ, जिला पंचायत सदस्य दिलीप पटेल, ग्राम सिंधोरा सरपंच निलेश पाटीदार, पूर्व सरपंच घनश्याम पटेल, ठेकेदार महेश चौहान, ऑल इंडिया बंजारा संघ के प्रदेश अध्यक्ष भीम सिंह राठौर, समाजसेवी कनीराम राठौड़, केशर कारोबारी गोविंद चौहान, समाजसेवी गुड्डू सोलंकी तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। जैन सोशल ग्रुप के सदस्यों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में जैन सोशल ग्रुप प्रेसिडेंट श्रीमति रीना चाजेड, किड्स कैम्प स्कूल की डायरेक्टर श्रीमति रचना कोठारी, ब्र.कु. जयंती दीदी, ब्र.कु. सुजाता बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य।



आष्टा-म.प्र.। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज के राजनैतिक सेवा प्रभाग द्वारा शांति सरोवर में आयोजित कल्प तर अभियान के अंतर्गत पौधा रोपण एवं रक्षाबंधन कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी, विधायक रघुनाथ सिंह मालवीय, नगरपालिका अध्यक्ष हेमकुंवर रायसिंह मेवाड़ा, जिला पंचायत अध्यक्ष गोपाल सिंह इंजीनियर, जनपद अध्यक्ष दीक्षा सोनू गुणवान, कोबोटो ट्रैक्टर शोरूम से भूपेन्द्र सिंह ठाकुर, पार्षद अंजनी विशाल चौरसिया, जिला पंचायत सदस्य कमल सिंह चौहान, ब्र.कु. नीलिमा बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



अलीराजपुर-म.प्र.। दादी प्रकाशमणि जी के पुण्य स्मृति दिवस पर दादी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् पौधारोपण करते हुए पुलिसकर्मी, ब्र.कु. भाई-बहनें तथा अन्य।

हर दीया महज दीया नहीं...एक संदेश...



भारतीय परंपरा में

हर एक त्योहार हमारे किये गये कर्मों का यादगार ही है। इसका इतिहास पुराना भी है और अति महत्त्वपूर्ण भी। लेकिन पुराने इतिहास के किंवदंतियों को कुरेदने के पश्चात् अलग-अलग समाजशास्त्री या विद्वान दोनों ने इनके अर्थों को स्थूलता के साथ जोड़ा कि ये बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है जिसमें साक्ष्य के रूप में वे कहते हैं कि श्रीराम चन्द्र जी ने रावण पर विजय प्राप्त की, उसकी यादगार में अयोध्या में दीप प्रज्वलन किया गया, दीपावली मनाई गई।

हम सब अगर इसके सामाजिक अर्थ से थोड़ा-सा निकलकर इसके शाब्दिक अर्थ को ही देखें तो पायेंगे कि अयोध्या शब्द अध्ययन शब्द से बना है। जब हम अपने छोटे-छोटे बिंदुओं को लेकर छोटे-छोटे विचारों को लेकर सेल्फ स्टडी करते या स्व-अध्ययन करते तो उसको अयोध्या शब्द के साथ जोड़ा जाता माना जहाँ सभी अपने एक-एक अध्याय को पूरा करने के लिए जुड़े हुए हैं। अब अयोध्या को राम की नगरी कहते जहाँ राजा भी सुखी, प्रजा भी सुखी। तो कोई भी राजा या प्रजा कहाँ पर सुखी रह सकता है? जहाँ सभी का विचार एक समान, व्यवहार एक समान, कर्म एक समान और एक-दूसरे के प्रति सम्मान हो वहाँ राम राज्य कहा जाये। कहने का अर्थ है कि व्यक्ति जब पूरी तरह से अपने आप को जागृत करे, अपने आत्मिक दीये को जगाये माना हर

आत्मा राम अपने आप को जागृत कर ले तो सभी को देखने का नजरिया हमारा बदल जाता है।

एक बहुत सुंदर गीत है, आप सबने सुना होगा, सत्यम् शिवम् सुंदरम्...। इस गीत की एक लाइन है, राम अवध में, काशी में शिव, कान्हा वृंदावन में, आगे की लाइनें हैं दया करो प्रभु देखूँ इनको हर घर के आंगन में। अब ये गीत पूरी तरह से क्या बयां करता है कि हर घर में अगर राम आ जाये, राम जैसे लोग आ जायें तो राजा और प्रजा सुखी नहीं हो जायेंगे! इसीलिए हमारे अंदर जो भाव है वो क्या है कि आज हर कोई चाहे कहे या न कहे, लेकिन अंदर से परेशान बहुत है। वो सिर्फ एक चरित्र के रूप में राम या कृष्ण की महिमा तो कर रहा है, गीत भी उसके अच्छे-अच्छे हैं, उसको गा भी रहा है, उन चरित्रों को दृढ़ भी रहा है, कहाँ पर, हर घर के आंगन में। और इस गाने में एक अंतिम लाइन है राधा मोहन शरणम्। इसका भावार्थ है कि जब कभी कीर्तन होता है तो लोग गाते हैं कि राधा-राधा रटने से बिहारी आ जायेंगे लेकिन आप अपने से सोचो कि राधा बोलने से बिहारी कैसे आ जायेंगे! राधा का अर्थ यहाँ पर है कि जो राम के गुण को धारण करे और जिसके अंदर 'मोह' न(मोहन) हो वैसा हर घर में राम और कृष्ण चाहिए। तो ये एक

दीपावली की ज्योति

का यादगार है कि जब हर आत्मा अपने पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में आती है, अपनी चैतन्यता को प्राप्त करती है, अपनी जागृति में जीती है, अपने हेल्थ-वेलथ और हैप्पीनेस की कम्प्लीट जागृति जिसके अंदर है वो दुनिया रामराज्य होगी। जब ऐसे राम राज्य की कल्पना जो हमारे जीवन में चल रही है तो निश्चित रूप से दीपावली जिसे दीपों का त्योहार कहते हैं उसमें दीप जगाने से क्या जागृति या रोशनी आ जाएगी पूरी दुनिया में! नहीं ना। तो वो हमारी जागृति का एक यादगार तो है लेकिन उसे निरंतर जगाये रखने से दीपावली के अर्थ के साथ हम जियेंगे।

पूरे साल में एक बार, वो भी मिट्टी का दीया और आजकल तो आर्टीफिशियल दीये और लाइट भी लगाते हैं, लड़ियां लगाते हैं। वो आत्मा की सजावट के लिए है या घर की सजावट के लिए? तो हमारे से चारों ओर रोशनी फैले, हमारे से लोगों के अंदर जागृति आए, हमारे जीवन के परिवर्तन के आधार से लोगों के अंतर में परिवर्तन हो तब तो दीपावली सही अर्थ में हम मनाएंगे या दीपावली के साथ सही अर्थ में न्याय कर पायेंगे। नहीं तो ऐसे ही दीये जगाते रहेंगे, हर साल मनाते रहेंगे लेकिन उसका अर्थ न जानने से केवल परंपरा वश हम कार्य कर लेंगे, उसके साथ जी नहीं पायेंगे। तो ये है दीपावली का सही भावार्थ। अगर आपको समझ में आ जाये तो समझो आपका कल्याण हो जाये।



रायपुर-शांति सरोवर(छ.ग.)। राज्यपाल अनुसूईया उर्फ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता दीदी।



चन्द्रपुर-महा। कैबिनेट मंत्री सुधीरभाऊ मुनगंटीवार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. कुंदा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. रेणुका बहन तथा ब्र.कु. प्रसाद भाई।



भिवंडी-महा। कृष्ण अष्टमी कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् साथ में उपस्थित हैं ब्र.कु. बिंदु बहन।



राजनांदगांव-छ.ग.। जिला पुलिस अधीक्षक प्रफुल्ल कुमार ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन।



इंदौर-इंद्रपुरी(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत आयोजित तिरंगा रैली में ब्र.कु. पूर्णिमा बहन, ब्र.कु. सीमा बहन, डॉ. सतीश फाटक, एम.एल. वर्मा तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



पुणे-पिंपरी(महा.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत श्रावण और चालीय पर्व पर आयोजित 'आजाद भारत से स्वर्णिम भारत की ओर' झांकी और रैली के दौरान नगरसेवक संदीप वाघेरे, डब्लू आसवानी, उद्योजक जवाहर कोटवाणी, सुरेश जुमानी, सुरेखा दीदी सहित उद्योग जगत के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।



छतरपुर-म.प्र.। विधायक आलोक चतुर्वेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रमा बहन।



श्रीलंका-देहीवाला। कोलंबो में इंडियन हाई कमिशनर गोपाल बागले एवं स्वामी विवेकानंद कल्चरल सेंटर के डायरेक्टर रेवंथ विक्रम सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. अम्बिका बहन। इस अवसर पर इंडियन हाई कमिशन के 50 ऑफिशियल्स को ब्रह्माकुमारीज द्वारा रक्षासूत्र बांधा गया।



चिंतामणि-कर्नाटक। विधायक एम. कृष्णारेड्डी को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्यामला बहन।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। दादी प्रकाशमणि जी के प्रंद्रहवें पुण्य स्मृति दिवस 'विश्व बंधुत्व दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते हुए वन विभाग के डीएफओ ध्यानचन्द्र डोडवे, ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य।

हार को हार न मान एक अवसर मानें



जाये तो देख लें कि क्या होगा ! घर में भी खुशी का माहौल नहीं होगा। एक उदाहरण देता हूँ, एक विद्यार्थी था उसका अपने बोर्ड को टॉप करने का लक्ष्य था। तैयारी वैसी थी लेकिन टॉप कर दिया दूसरे ने। उसका नम्बर सेकण्ड रह गया। अन्तर रहा केवल प्वाइंट टू परसेंट का। देखिए कितना थोड़ा रहा। लेकिन वो निराश हो गया। उसको डिप्रेशन हो गया। उसके मार्क्स भी बहुत थे लेकिन एक एक्सपेक्टेडेशन (आशा) पूरी नहीं हुई उसने उसको हार मान लिया, असफलता मान ली और इतना सोच लिया, इतना व्यर्थ संकल्प चला लिया कि डिप्रेशन हो गया। डिप्रेशन को दूर करने में साल लगा। तब तक एक साल उसका बेकार हुआ। मैंने उसे कहा जो बच्चे केवल पास हुए 50 प्रतिशत लाकर उनके घरों में मिठाईयां बंट रही है हमारा बच्चा पास हो गया। और तुम 90 प्रतिशत

हमारी खुशी की, हमारी शान्ति की, हमारे जीवन में बहुत वैल्यू है। हमारा खुशनुमा जीवन हमारे जीवन की वैल्यू को बढ़ा देता है। यदि मन में व्यर्थ संकल्प चल रहे हों, बुरे संकल्प चल रहे हों, निराशा के संकल्प चल रहे हों तो खुशी, शान्ति समाप्त हो जाती है। परंतु हम अपना मन तैयार करें। मना बना लें कि मुझे खुश रहना है। खुशी और शान्ति तो मेरी अपनी सम्पदा है। ये सबको जानना चाहिए जैसे धन हमारा खजाना, हमारी सम्पत्ति है। हम उसको बहुत वैल्यू देते हैं- कमाने पर भी और बचाने पर भी। ऐसे ही खुशी और शान्ति बहुत बड़े खजाने हैं। शान्ति नष्ट हो जाये तसे टेंशन ही रहने लगे रात-दिन। चिंताओं में जीवन जलने लगे, तो धन-सम्पत्ति भी बेकार नजर आने लगती है ना! सम्बन्धों में झगड़े हो रात-दिन, खुशी नहीं रहती, लगता है सबकुछ छोड़ खुशी रहनी चाहिए। जैसे देह को खुराक न मिले तो क्या हाल होगा देह का! मन को, आत्मा को खुशी न मिले तो उसका भी हाल बुरा हो जाता है। तो हम तैयार रहें किसी भी कीमत पर मुझे तो अपनी खुशी नहीं छोड़नी है। मनुष्य की जब हार होती है, जब उसे असफलता मिलती है तब उसके संकल्प भी बहुत तेज हो जाते हैं, उसकी खुशी भी चली जाती है।

हम याद रखें हार-जीत जीवन का खेल है। ये जीवन में चलता ही रहेगा। रेस्तर हैं एक की जीत, एक की हार, दो धावक हैं किसी को गोल्ड मेडल, किसी को सिल्वर, किसी को कांस्य पदक मिलेगा तय है। कितना अंतर होता है, बहुत मामूली सा। लेकिन एक धावक जिसको कांस्य पदक मिला वो निराश हो जाये, छोड़ दे हम नहीं दौड़ेंगे आज से। हमारे भाग्य में तो सफलता है ही नहीं। हमारी तो हार ही हो रही है जहाँ-तहाँ। हमने पता नहीं क्या पाप किए, हमारा तो भाग्य ही फूटा हुआ है। संकल्पों की एक लम्बी लाइन उसके मन में लग

जिनकी आँखें नहीं होती, जिनको नेत्रहीन अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके दोनों हाथ नहीं वो बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके पैर कट गये वो भी चमत्कारिक काम कर रहे हैं, तो हम निराश क्यों...!

से भी ज़्यादा लेकर उदास हो गये हो। तुम्हारे चेहरे की रौनक समाप्त हो गई, सम्भलो थोड़ा, बुद्धिमान बनो। ये हमें जानना चाहिए कि सफलता-असफलता, हार-जीत, ये सदा ही चलता आया है। अच्छे-अच्छे योग्य व्यक्ति भी कभी-कभी हार जाते हैं। अच्छे-अच्छे बहादुर लोगों को असफलता का मुंह देखा पड़ता है। बड़ी-बड़ी सेनायें भी कभी-कभी हार मान लेती हैं। हार से हार नहीं मानना है बस ये स्लोगन पक्का कर दो। कहीं भी होने वाली हार मुझे हरा नहीं सकती। मेरी जीत निश्चित होगी, कोई भी हार मेरे मनोबल को गिरा नहीं सकती। ये पॉवरफुल संकल्प करें क्योंकि मैं भगवान की संतान हूँ। वो सर्वशक्तिवान है। तो मैं भी पॉवरफुल हूँ। शक्तिशाली आत्मायें कभी भयभीत नहीं हुआ करती। वो तो निर्भय हैं। वो कभी कदम पीछे नहीं हटाया करती। कुछ भी

हो जाये वे तो आगे बढ़ती रहती हैं।

हार हो जाये तो बहुत सारे व्यर्थ संकल्प अपने मन में चलायें नहीं। बार-बार प्रयास करने पर भी मेरी हार होती है। क्या करूँ, इससे तो अच्छा मर जाऊँ। इससे तो अच्छा ये काम छोड़कर ये काम कर लूँ। अभी मरने का संकल्प बहुतों को आता है। जब असफल हो जाते हैं तो निराश होकर सोचते हैं कि सुसाइड कर लूँ। ये कमजोर संकल्प कायरता से भरपूर संकल्प हैं। अरे जब अंधे लोग भी, जिनको नेत्रहीन आजकल अलग-अलग नाम दिए जाते हैं, बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके दोनों हाथ नहीं हैं वो बड़े-बड़े काम कर रहे हैं। ऐसे लोग जिनके पैर कट गये हैं वो भी चमत्कारिक काम कर रहे हैं। तो हम निराश क्यों हों, ऐसे पॉवरफुल संकल्प करें। तो हमारा एक पॉवरफुल, पॉजिटिव संकल्प अनेक व्यर्थ संकल्पों को नष्ट करेगा। तो बस ध्यान दें इस व्यर्थ की दलदल में फंसते न जायें क्योंकि ये ऐसी दलदल है जो गहरी होती जाती है, डूबो देती है, नष्ट कर डालती है। इसमें ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। लेकिन केवल सम्पूर्ण ज्ञान ले लेना काफी नहीं है उसको यूज करना, उसको एप्लाइ करना उसकी बहुत आवश्यकता होती है जीवन में।

व्यर्थ हमारी चीज़ नहीं है, हमारा जीवन तो समर्थ के लिए है, हम भगवान के बच्चे हैं। अच्छा ही सोचना है। मैं आपको फिर याद दिला दूँ हमारे संकल्पों के वायब्रेशन दूर-दूर तक फैलते हैं। और जो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करने वाले हैं, श्रेष्ठ योग करने वाले हैं उन्हें जानना चाहिए हमारी पॉजिटिव और पॉवरफुल, प्युअर संकल्प, समस्त आकाश मंडल को, नक्षत्रों को प्रभावित करते हैं तो क्यों न हम ये महान कार्य करें, क्यों व्यर्थ में रहकर अपनी श्रेष्ठ एनर्जी को नष्ट करें। अपने को ये चिंतन देना है। हम व्यर्थ से मुक्त होते चलेंगे। अच्छे संकल्पों से हमारा मन भरपूर होता चलेगा और हमें ये रोज-रोज रियलाइज़ होगा कि ये सुन्दर संकल्प हमारी पर्सनैलिटी का निर्माण कर रहे हैं, और सुन्दर बना रहे हैं, आकर्षक बना रहे हैं। ये हमारा बहुत बड़ा खजाना है और हम बहुत साहूकार हो गये हैं। जब खजाना बढ़ता है तो बहुत खुशी होती है। तब हमारा जीवन खुशियों का भण्डार बन जायेगा।



इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। पूर्व उप राज्यपाल डॉ. किरण बेदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके तथा ब्र.कु. किशोर भाई।



गांधीनगर से.28(गुज.)। ग्राम विकास एवं ग्राम गृह निर्माण मंत्री अर्जुन सिंह चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए गांधीनगर की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी।



धार-म.प्र.। विधायक श्रीमति नीना वर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सत्या बहन। साथ हैं ब्र.कु. शीतल बहन तथा ब्र.कु. अनु बहन।



ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा अम्मा महाराज की छतरी मंदिर में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव में आये युवराज महाआर्यमन सिंधिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी व ब्र.कु. ज्योति बहन। इस मौके पर ब्र.कु. डॉ. गुरचरण भाई, छतरी के प्रभारी जयंत जपे सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



बकतारा-भोपाल(म.प्र.)। असिस्टेंट कमिश्नर श्रीमति चंद्रकांता सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तुलसा बहन।



इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा भंडारी हॉस्पिटल में कोरोना वॉरियर्स डॉक्टर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में भंडारी हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर के मैनेजिंग डायरेक्टर को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुराधा बहन, ब्र.कु. राजमणि बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. डॉ. सतीश फाटक।



शाजापुर-म.प्र.। दादी प्रकाशमणि जी के प्रद्वहवें पुण्य स्मृति दिवस 'विश्व बंधुत्व दिवस' पर ब्रह्माकुमारीज एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में 1500 पौधे लगाये गये।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मध्य प्रदेश हाउसिंग बोर्ड के डिप्टी कमिश्नर बी.के. अग्निहोत्री, वेस्टर्न सेंट्रल रेवेले जबलपुर के पर्सनल ऑफिसर संजय सिन्हा, ब्र.कु. विनीता बहन तथा ब्र.कु. बाला बहन।



नीमच-मनासा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के शिव सागर कॉलोनी स्थित सेवाकेन्द्र द्वारा सद्भावना सभागार में नवनिर्वाचित पार्षदों व जनपद सदस्यों के साथ ही आमंत्रित गणमान्य नागरिकों के लिए स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज के एरिया डायरेक्टर ब्र.कु. सुरेन्द्र भाई, सबजोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सविता दीदी, नवनिर्वाचित नगर परिषद अध्यक्ष डॉ. सीमा तिवारी, नगर पंचायत परिषद के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, विपक्ष के समस्त पार्षदांगण सहित शहर के अन्य महानुभाव उपस्थित रहे।



सोलापुर-बाण्णी(महारा.)। स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय ध्वज प्रदर्शित करते हुए मेजर काका सोहेबराव जाधव, ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी, उपक्षेत्रीय संचालिका, बाण्णी शहर पुलिस स्टेशन वाहतूक शाखा के प्रमुख पुलिस उपनिरीक्षक गजानन कर्णेवाड, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन, पत्रकार धीरज शेळके, ब्र.कु. दुय्यंत भाई तथा अन्य।

कार्यशाला • आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत पत्रकारों एवं राजनीतिज्ञों हेतु तनाव प्रबंधन कार्यशाला

तनाव मुक्ति के लिए अध्यात्म और प्रकृति को साथी बनायें



एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में तनाव प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

नई दिल्ली। आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'माँ तुझे सलाम' थीम को लेकर पत्रकारों एवं राजनेताओं हेतु 'मेडिटेशन द्वारा तनाव मुक्ति' विषय पर एक प्रेरक कार्यशाला स्थानीय एनडीएमसी सेंटर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

यह आयोजन ब्रह्माकुमारीज एवं इंडियन मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज जो संस्कार देती है वो निश्चित रूप से हमारे जीवन के लिए फलदायक

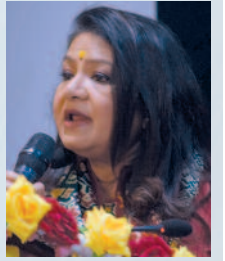
है। आध्यात्मिकता के आधार पर ही विश्व को हमने नैतिक मापदंड अपनाने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहा कि भारत के दर्शन एवं आध्यात्मिकता को देश-विदेश में फैलाने का श्रेय विश्व व्यापी ब्रह्माकुमारी संस्था को जाता है। आईआईएमसी, भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि अपने जीवन में अध्यात्म और प्रकृति को साथी

बनायें तो जीवन में तनाव नहीं होगा। सुख शांति और वैभव तीनों के लिए आध्यात्मिकता और भौतिकता का संतुलन आवश्यक है। ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के द्वारा जीवन में मानवीय मूल्यों और साइलेंस की शक्ति को धारण करके आज के मीडियाकर्मी एवं राजनीति के लोग स्वतः प्रेरित, सर्जनशील एवं तनाव रहित रह सकते हैं।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि निष्पक्ष, निःस्वार्थ, न्यायपूर्ण पत्रकारिता से पत्रकार तनावमुक्त रह सकते हैं।

राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास की जरूरत

न्यूज़ 24 की एडिटर इन चीफ श्रीमति अनुराधा प्रसाद ने कहा कि आज के पत्रकार दो धारी तलवार पर चल रहे हैं। इसलिए ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग मेडिटेशन के नियमित अभ्यास की जरूरत है जिससे हम पत्रकार अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में तनाव को कम करते हुए खुश रह सकें।



जन कल्याण के अर्थ कार्य करना होगा। भारतीय मीडिया कल्याण संघ के अध्यक्ष राजीव निशाना ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज द्वारा दिया जा रहा ज्ञान हमें तनाव से दूर करने

है। आशीर्वचन देते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था के दिल्ली और हरियाणा स्थित अनेक सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि तनाव मुक्त रहने के लिए सभी को अपने जीवन में राजयोग मेडिटेशन को शामिल करना होगा। देशभक्ति पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम स्कूल के बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किया गया। 300 से अधिक लोगों ने कार्यक्रम का लाभ लिया। मंच पर उपस्थित दिल्ली पुलिस के विशेष आयुक्त दीपेन्द्र पाठक, आई पीएस ने कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया।

कार्यक्रम में विशेष

सभी महानुभावों ने तनाव मुक्ति विषय पर रखे अपने महत्वपूर्ण वक्तव्य

देशभक्ति पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की स्कूल के बच्चों द्वारा दी गई प्रस्तुति

राजनेताओं को तनावमुक्त होने के लिए वोट और नोट से ऊपर उठकर

में मदद करता है इसलिए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया

जीवन में लॉ के साथ लव भी होना ज़रूरी



अमरावती-मह। 'शांति का विज्ञान' विषय पर ब्रह्माकुमारीज के विश्व परिवर्तन भवन में संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस मौके पर डॉ. ए.पी. देशमुख, अधिष्ठाता, पंजाबराव देशमुख मेडिकल कॉलेज, अमरावती तथा डॉ. श्याम सुंदर निकम, पूर्व जिला शल्य चिकित्सक, अमरावती मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की

अध्यक्षा ब्रह्माकुमारीज अमरावती की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी ने संस्थान का परिचय देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज का मेडिकल प्रभाग मेडिटेशन के द्वारा बीमारियों को कैसे ठीक कर सकते हैं, इस पर कार्य कर रहा है और हार्ट ब्लॉक जैसी समस्या को भी मेडिटेशन और लाइफ स्टाइल चेंज के द्वारा समाप्त किया जा रहा है। ब्र.कु.

डॉ. ई.वी. गिरीश ने कहा कि मेडिकल के सेक्टर में कोई भी लॉ पूर्ण रूप से सुरक्षा नहीं दे पा रहा है। लॉ के साथ हमें अपने जीवन में लव लाने की जरूरत है। इस मौके पर कोविड जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यता और प्रेम से रोगियों की सेवा करने वाली सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, अमरावती, रिम्स हॉस्पिटल, बख्तर हॉस्पिटल की नर्सों एवं मेट्रन का सत्कार किया गया। इस मौके पर डॉ. आशा हरवाणी, अध्यक्षा, आई.एम. ए. एवं डॉ. आशा ताई ठाकरे के साथ मेडिकल प्रभाग के सभी डॉक्टर एवं मेडिकल स्टाफ मौजूद रहे। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. अश्विना बहन व आभार डॉ. कल्पना ताई राठी ने किया।

हलालपुर में 'आत्मनिर्भर किसान दिव्य सम्मेलन'

दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज के ग्राम विकास प्रभाग, दिल्ली ज़ोन द्वारा हलालपुर गांव में आयोजित 'आत्मनिर्भर किसान दिव्य सम्मेलन' में ठाकुर किरन पाल सिंह, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, भा.कि.यू. ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों ने किसानों का यह मुद्दा उठाकर सराहनीय कार्य किया है। मैं मथुरा का हूँ और मैं मथुरा में भी ऐसे ही भव्य कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्य करूंगा। राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, चेयरपर्सन, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज ने कहा कि भारत को सुपर पावर बनाने में किसानों का अहम रोल है। वर्तमान समय किसानों के आत्मसम्मान को जगाने का है। आत्मविश्वास से आत्मसम्मान जागृत होगा। जिला अधिकारी बहन शर्मिला, अतिरिक्त

सरपंच और रिटायर्ड कमिश्नर, उत्तरी रेलवे के कुलदीप दहिया, शिक्षा अधिकारी, सिल्वर पदम विजेता ओम्पिक तथा स्वर्ण पदक विजेता कॉमनवेल्थ गेम्स के रवि दहिया,

दिल्ली ज़ोन के संजय राघव ने भा.कि.यू. के सभी सदस्यों को ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय में होने वाले किसान सम्मेलन का निमंत्रण दिया। इस सम्मेलन का आयोजन

• शाश्वत यौगिक खेती के प्रति बढ़ता किसानों का रुझान

• सम्मेलन में सम्मिलित होने पहुंचे हजारों किसान



असि. सुपरिटेण्डेंट, सोनीपत धर्मपाल दहिया तथा प्रसिद्ध समाजसेवी भूपसिंह दहिया ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की। मौके पर भा.कि.यू. के मुख्य महासचिव,

ग्राम विकास प्रभाग की कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. राजकुमारी दीदी, मजलिस पार्क तथा कोऑर्डिनेटर जयप्रकाश भाई, सत्कार भवन ने किया। ब्र.कु. सुनीता बहन ने कार्यक्रम का उद्देश्य बताया।

शाश्वत यौगिक खेती बनाएंगी किसानों को आत्मनिर्भर

ब्रह्माकुमारीज के भाग्यविधाता भवन में पहुंचे 500 से अधिक किसान बंधु

राजयोगी साधकों ने बताया शाश्वत यौगिक खेती का महत्व

बैतूल-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज के भाग्य विधाता भवन में 'स्वर्णिम भारत की पहचान आत्मनिर्भर किसान' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में 500 से अधिक ग्राम सरपंच सचिव, किसान बंधु, कृषि अधिकारी एवं ग्राम विकास तथा कृषि से जुड़े महानुभावों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय माउंट आबू से आए कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई ने कहा कि वर्तमान समय शाश्वत यौगिक खेती को अपनाना बहुत जरूरी है क्योंकि कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन होता है। अन्न का प्रभाव मन पर और मन का प्रभाव तन पर होता है। अगर तन और मन को स्वस्थ रखना है तो हमें प्राकृतिक तरीके की शाश्वत यौगिक खेती को अपनाना होगा। इससे ही हमारा देश और किसान समृद्ध और खुशहाल हो सकेंगे। कोल्हापुर से आये ब्र.कु. बाला साहब ने



शाश्वत यौगिक खेती के अपने प्रयोगों और अनुभव को साझा करते हुए कहा कि अनेक वैज्ञानिक शोध हमें यही इशारा देते

हैं कि वर्तमान खेती में रसायनों का उपयोग हमारे स्वास्थ्य, ज़मीन और आने वाली पीढ़ी सभी के लिए हानिकारक है। बैतूल

हरदा क्षेत्र के सांसद डी.डी. उईके ने कहा कि हमें पूर्वजों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए कृषि की पारंपरिक पद्धति को अपनाना है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, कृषि वैज्ञानिक विजय वर्मा, लायंस क्लब अध्यक्ष प्रताप देशमुख, ब्र.कु. रेखा बहन, मुरैना, ब्र.कु. मंजू बहन, बैतूल, ब्र.कु. सुनीता बहन, सारणी, ब्र.कु. नंदकिशोर भाई आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे। अंत में ब्र.कु. अरुणा बहन ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराया तथा शाश्वत यौगिक खेती अपनाने का संकल्प कराया।